The Pslam of Peace

An English Translation of
Guru Arjan Devji's 'Sukhmani'
by
Prop. Teja Singh M. A.

Guru Arjan Devji's "Sukhmani" has been rendered into beautiful English with a fine style by late Professor Teja Singh, who was an authority on Sikh Religion and a great Scholar of Sikh Scriptures.

This translation preaserves as for as possible the spirit of the original and is a very useful contribution to the study of Sikhism.

Guru Arjan Devji himself remarks in the "Gem of Peace" "He who listens to this Pslam with love and gives it a place in his heart, shall be able to commune with the Lord."

Rs. 4/—

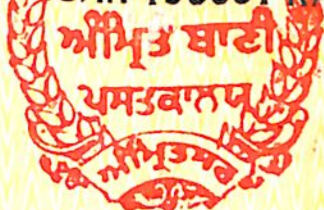
Khalsa Brothers
AMRITSAR.



१ ओं



सुन्दर गुटका



प्रकाशक :-

खालसा ब्रद्रज़
बज़ार माई सेवां, अमृतसर


ation

जपुजी साहिब

१ ओं सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी
सचु नानक होसी भी सचु॥१॥सोचै
सोचि न होवई जे सोची लखवार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा
लिवतार ॥ भुखिआ भुख न उतरी
जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस

सिम्रागापा लखहोहि त इक न चलै
नालि॥ किव सचिम्रारा होईऐ किव
कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि
रजाई चलगा नानक लिखिम्रा
नालि ॥१॥ हुकमी होवनि म्राकार
हुकमु न कहिम्रा जाई ॥ हुकमी
होवनि जीम्र हुकमि मिलै वडिम्राई
॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि
दुख सुख पाईम्रहि ॥ इकना हुकमी
बखसीस इकि हुकमी सदा
भवाईम्रहि ॥ हुकमै म्रंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोइ॥ नानक हुकमै
जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै
को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को
जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै
हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न
आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी
कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे
थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही
खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ
भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि
देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि
अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि
धरे पिआरु ॥ अंम्रित वेला सचु
नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी
आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचि-
आरु ॥४॥थापिआ न जाइ कीता न
होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुर
मुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु
गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती
माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक
देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का
इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु
भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि
उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै
लई ॥ मति विचि रतन जवाहर

माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ

करे ॥ ७ ॥ सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिम्रित वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ९ ॥ सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥
सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ
हाथ होवै असगाहु ॥ नानक
भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ
दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥
मंने की गति कही न जाइ ॥ जे
को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि

कलम न लिखणाहारु ॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥ मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा न खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १३ ॥ मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा

नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥ मंनै पावहि मोखु दुआरु॥मंनै परवारै साधारु ॥ मंनै तरैतारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १५ ॥ पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ

जिनिं सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिसते होए लख दरीआउ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै

साई भली कार ॥ तू सदा सला
मति निरंकार ॥ १६ ॥ असंख
जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा
असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ
मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग
मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत
गुण गिआन वीचार ॥ असंख
सती असंख दातार ॥ असंख सूर
मुह भख सार ॥ असंख मोनि
लिव लाइतार ॥ कुदरति कवण
कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा
एक वार ॥ जो तुधु भावै साई
भली कार ॥ तू सदा सलामति

निरंकार ॥ १७॥ असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हराम खोर ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गल वढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भलीकार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥ असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम

असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि
भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी
सालाह॥ अखरी गिआनु गीत गुण
गाह॥अखरीलिखणुबोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखेतिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिवतिव पाहि ॥ जेता
कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही
को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा
वीचारु॥वारिआ न जावा एकवार ॥
जो तुधु भावै साई भलीकार ॥ तू
सदा सलामतिनिरंकार॥१९॥ भरीऐ
हथुपैरु तनुदेह॥ पाणी धोतै उतरसु

खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि॥ओहु धोपै नावै कै रंगि॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जेको पावै तिलकामानु॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतर गति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी

बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इकदू इकु

सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई
कीता जाका होवै ॥ नानक जे को
आपौजाणै अगै गइआ न सोहै॥२१
॥ पाताला पाताल लख आगासा
आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि
थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस
अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु
धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै
होइ विणासु ॥नानक वडा आखीऐ
आपे जाणै आपु ॥२२॥ सालाही
सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न
जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान

गिरहा सेती मालु धनु॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥ २३ ॥ अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ताके अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥ एवडु

ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु

आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ
मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ
आखहि सि भि केई केइ ॥ जिसनो
बखसे सिफति सालाह ॥ नानक
पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥ अमुल
गुण अमुल वापार॥अमुल वापारीए
अमुल भंडार॥अमुल आवहि अमुल
लै जाहि॥अमुल भाइ अमुला समाहि
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु
बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु
करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो
अमुलु आखिआ ना जाइ ॥ आखि

आखि रहे लिवलाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ अखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडुहोइ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जेको आखै बोलु

विगाड़ु ॥ता लिखीऐ सिरि गावारा
गावारु॥२६॥ सोदरुकेहासो घरुकेहा
जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद
अनेक असंखा केते वावण हारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते
गावण हारे ॥ गावहि तुहनो पउणु
पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु
दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि
जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि
सदा सवारे ॥ गावहि इंद इदासणि
बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि
सिध समाधी अंदरि गावनि साध

वीचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी
गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडत
पड़नि रखीसर जुगुजुगु वेदा नाले॥
गावहिमोहणीश्रा मनुमोहनि सुरगा
मछ पइश्राले ॥ गावनि रतन उपाए
तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि
जोध महाबल सूरा गावहि खाणी
चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा
करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो
गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे
भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि
से मै चिति न श्रावनि नानकु
किश्रा वीचारे ॥ सोई सोई सदा

सचु साहिबु साचा साची नाई॥ हैभी
होसी जाइ न जासी रचना जिनि
रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि
जिनसी माइआ जिनि उपाई॥ करि
करि वेखै कीता आपणा जिव तिस
दी वडिआई॥ जो तिसु भावै सोई
करसी हुकमु न करणा जाई॥ सो
पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक
रहणु रजाई ॥२७॥ मुंदा संतोखु
सरमु पतु झोली धिआन की करहि
बिभूति॥खिंथा कालुकुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति॥ आई पंथी
सगल जमाती मनि जीतै जगुजीतु॥

आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥ भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग॥आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥ एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकुभंडारी इकु लाएदीबाणु॥ जिव तिसुभावै तिवैचलावै जिव होवै

फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥आदेसु तिसै आदेसु॥आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥३०॥ आसणु लोइ लोइ भंडार॥ जो किछु पाइआ सु एकावार॥ करि करि वेखै सिरजणहारु॥नानक सचे की साची कार॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥३१॥इकदूजीभौ लखहोहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ

होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास
की कीटा आई रीस॥ नानक नदरी
पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥
आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु
न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न
जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न
राजिमालि मनिसोरु॥ जोरु न सुरती
गिआनि वीचारि॥जोरु न जुगतीछुटै
संसारु॥जिसुहथिजोरु करि वेखै सोइ
॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥
राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी
अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती
थापिरखीधरमसाल॥तिसुविचिजीअ

जुगति के रंग ॥ तिनके नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाईओथै पाइ नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥

धरम खंड का एहोधरमु॥गिआनखंड का आखहु करमु॥ केते पवण पाणी बैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध

बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन
समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ
बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ
सुरती सेवक केते नानक अंतु न
अंतु॥३५॥गिआनखंड महि गिआनु
परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड
अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी
रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु
अनूपु ॥ ताकीआ गला कथीआ
न जाहि॥जेको कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि
॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की

सुधि ॥३६॥ करम खंड की
बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई
होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामुरहिआ भरपूर ॥तिथै
सीतो सीता महिमा माहि ॥ ताके
रूप न कथने जाहि॥न ओहि मरहि
न ठागे जाहि ॥ जिनकै रामु
वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि
के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि
सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल॥ तिथै
खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै
त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ

आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिवकार॥वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तपताउ ॥ भांडा भाउ अम्रतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिनकार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ

दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ १ ॥



शबद हजारे

माझ महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरा मनु लोचै गुरदरसन ताई ॥
बिलप करे चात्रिक की निआई ॥
त्रिखा न उतरै सांति न आवै
बिनु दरसन संत पिआरे जीउ
॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि
घुमाई गुर दरसन संत पिआरे
जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु
सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥
चिरु होआ देखे सारिंग पाणी ॥
धंनु सु देसु जहां तूं वसिआ मेरे

सजरा मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ
घोली हउ घोलि घुमाई गुर
सजरा मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता
कलिजुगु होता ॥ हुणिकदि मिलीऐ
प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि
न विहावै नीद न आवै बिनु
देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु
सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु
मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर
महि पाइआ ॥ सेव करी पलु

चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ १ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुरप्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु

साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ
॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि
उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै
नामि तरा सद कुरबाणै जाउ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है
दूजा नाही कोइ ॥ ताकी सेवा
सो करे जाकउ नदरि करे ॥ ३ ॥
तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा
वडिआई देहि जितु नामि तेरे
लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ
तिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥
१ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा
अवरु न जांचउ कोइ ॥ नानकु

ताका दास है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥ १ ॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरबाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ हंउ कुरबानै

जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥
लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ
सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
काइग्रा रंङणि जे थीऐ पिग्रारे
पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला
जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न
डीठ ॥ २ ॥ जिनके चोले रतड़े
पिग्रारे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि
तिना की जे मिलै जी कहु नानक
की अरदासि ॥ ३ ॥ आपे साजे
आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥
नानक कामणि कंतै भावै आपे
ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

तिलंग महला १ ॥

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ

अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥ २ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जाकै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु

कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

सूही महला १ ॥

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ

तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जल थल महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ताकी संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥ ४ ॥ २ ॥ १ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ ॥
चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा

मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतु-
राई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे
कथि देखा मै अकथु न कथना जाई
॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु
तेरी वडिआई ॥३॥ एते कूकर हउ
बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा
ता खसमै नाउ न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥

बिलावलु महला १ ॥

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही
तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि
बसतु है बहुड़ि जनमि न आवा
॥ १ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती

मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जापु साहिब

स्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥ रूप रंग अरु रेखभेख कोऊ कहि न सकत किह ॥ अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिज्जै ॥ कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिज्जै ॥ त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन तृण कहत ॥ तव

सरब नाम कथै कवन करम
नाम बरनत सुमत ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले॥ नमसत्वं कृपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥
॥ २ ॥ नमसतं अभेखे ॥ नमसतं
अलेखे ॥ तमसतं अकाए ॥ नमसतं
अजाए ॥३॥नमसतं अगंजे॥ नमसतं
अभंजे ॥ नमसतं अनामे ॥ नमसतं
अठामे ॥ ४ ॥ नमसतं अकरमं ॥
नमसतं अधरमं ॥ नमसतं अनामं ॥
नमसतं अधामं ॥ ५ ॥ नमसतं
अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥ नमसतं

अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥ ६ ॥
नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे
॥ नमसतं अछेदे ॥ नमसतं
अगाधे ॥ ७ ॥ नमसतं अगंजे ॥
नमसतं अभंजे ॥ नमसतं उदारे ॥
नमसतं अपारे ॥८॥ नमसतं सु एके
नमसतं अनेके ॥ नमसतं अभूते ॥
नमसतं अजूपे ॥ ९ ॥ नमसतं
निरकरमे ॥ नमसतं निरभरमे
नमसतं निरदेसे ॥ नमसतं निरभेसे
॥१०॥ नमसतं निरनामे ॥ नमसतं
निरकामे ॥ नमसतं निरधाते ॥
नमसतं निरघाते ॥ ११ ॥ नमसतं

निरधूते ॥ नमसतं अभूते ॥ नमसतं
अलोके ॥ नमसतं असोके ॥ १२ ॥
नमसतं निरतापे॥ नमसतं अथापे ॥
नमसतं त्रिमाने ॥ नमसतं
निधाने ॥ १३ ॥ नमसतं अगाहे ॥
नमसतं अबाहे ॥ नमसतं त्रिबरगे
॥ नमसतं असरगे ॥ १४ ॥
नमसतं प्रभोगे ॥ नमसतं सुजोगे ॥
नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥
१५ ॥ नमसतं अगंमे ॥ नमसतसतु
रंमे ॥ नमसतं जलासरे ॥
नमसतं निरासरे ॥ १६ ॥ नमसतं
अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥

नमसतं अमजबे ॥ नमसतसतु
अजबे ॥ १७ ॥ अदेसं अदेसे ॥
नमसतं अभेसे ॥ नमसतं निरधामे ॥
नमसतं निरबामे ॥ १८ ॥ नमो
सरब काले ॥ नमो सरब दिआले ॥
नमो सरब रूपे ॥ नमो सरब भूपे ॥
१९॥ नमो सरब खापे ॥ नमो सरब
थापे॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब
पाले ॥ २० ॥ नमसतसतु देवे ॥
नमसतं अभेवे ॥ नमसतं अजनमे ॥
नमसतं सुबनमे ॥ २१ ॥ नमो
सरब गउने ॥ नमो सरब भउने ॥
नमो सरबरंगे॥नमो सरब भंगे॥२२॥

नमो काल काले ॥ नमसतसतु दिआले ॥ नमसतं अबरने ॥ नमसतं अमरने ॥ २३ ॥ नमसतं जरारं ॥ नमसतं कृतारं ॥ नमो सरब धंधे ॥ नमो सत अबंधे ॥ २४ ॥ नमसतं निरसाके ॥ नमसतं निरबाके ॥ नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥ २५ ॥ नमसतं अनंते ॥ नमसतं महंते ॥ नमसतसतु रागे ॥ नमसतं सुहागे ॥ २६ ॥ नमो सरब सोखं ॥ नमो सरब पोखं ॥ नमो सरब करता ॥ नमो सरब हरता ॥ २७ ॥ नमो जोग जोगे ॥ नमो भोग भोगे ॥ नमो सरब

दिआले ॥ नमो सरब पाले ॥२८॥

चाचरी छंद त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू हैं ॥
अभू हैं ॥ २९ ॥ अलेख हैं ॥
अभेख हैं ॥ अनाम हैं ॥ अकाम
हैं ॥ ३० ॥ अधे हैं ॥ अभे हैं ॥
अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ ३१ ॥
त्रिमान हैं ॥ निधान हैं ॥ त्रिबरग
हैं ॥ असरग हैं ॥ ३२ ॥ अनील
हैं ॥ अनादि हैं ॥ अजे हैं ॥ अजादि
हैं ॥३३॥ अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥
अभूत हैं ॥ अभरन हैं ॥ ३४ ॥
अगंज हैं ॥ अभंज हैं ॥ अझूझ हैं ॥

अभंभ हैं ॥ ३५ ॥ अमीक हैं ॥
रफ़ीक हैं ॥ अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥
३६ ॥ निरबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥
अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥३७॥
अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनंत
हैं ॥ महंत हैं ॥ ३८ ॥ अलीक
हैं ॥ नृसीक हैं ॥ निरलंभ हैं ॥
असंभ हैं ॥ ३९ ॥ अगंम हैं ॥
अजंम हैं ॥ अभूत हैं ॥ अछूत हैं
४०॥ अलोक हैं॥असोक हैं॥अकरम
हैं ॥ अभरम हैं ॥ ४१ ॥ अजीत
हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं ॥
अगाह हैं ॥ ४२ ॥ अमान हैं ॥

निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥ ४३ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥ नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥ नमो काल काले ॥ नमो सरब पाले ॥ नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब भउणे ॥ ४५ ॥ अनंगी अनाथे ॥ निरसंगी प्रमाथे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो मान माने ॥४६॥ नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥ ४७ ॥ नमो नृत

नृते ॥ नमो नाद नादे ॥ नमो पान
पाने ॥ नमो बाद बादे ॥ ४८ ॥
अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥
४९ ॥ कलंकं बिनाने कलंकी सरूपे
॥ नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥
५० ॥ नमो जोग जोगेस्वरं परम
सिध्दे ॥ नमो राज राजेस्वरं परम
बृध्दे ॥५१॥ नमो सस्त्र पाणे ॥
नमो अस्त्र माणे ॥ नमो परम
गिआता ॥ नमो लोक माता ॥५२॥
अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते ॥
नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ॥

५३ ॥ नमो नित्त नाराइणो क्रूर करमे ॥ नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४॥ नमो रोग हरता ॥ नमो राग रूपे ॥ नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥ ५५ ॥ नमो दान दाने नमो मान मानं ॥ नमो रोग रोगे ॥ नमसतं इसनानं ॥ ॥५६॥ नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो जंत्र जंत्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो तंत्र तंत्रं ॥ ५७ ॥ सदा सच्चदा नंद सरबं प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥ ५८ ॥ सदा सिद्धदा बुद्धदा बृद्द करता ॥

अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ॥ ५० ॥ परं परम परमेस्वरं प्रोछ पालं ॥ सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ॥ ६० ॥ अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥ समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥ ६१ ॥

तेरा जोरु ॥ चाचरा छंद ॥

जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥ ६२ ॥ प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥ ६३ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे

नमो सरब माने ॥ समसती
निधाने ॥ ६४॥ नमसत्वं निरनाथे ॥
नमसत्वं प्रमाथे ॥ नमसत्वं अगंजे ॥
नमसत्वं अभंजे ॥ ६५ ॥ नमसत्वं
अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥ नमो
सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥६६॥
नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे
॥नमोशाह शाहे ॥ नमो माह माहे ॥
६७ ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो
प्रीत प्रीते ॥ नमो रोख रोखे ॥नमो
सोख सोखे ॥६८॥ नमो सरब रोगे
॥ नमो सरब भोगे ॥ नमो सरब
जीतं ॥ नमो सरब भीतं ॥ ६९ ॥

नमो सरब गिआनं ॥ नमो परम
तानं ॥ नमो सरबं मंत्रं ॥ नमो सरब
जंत्रं ॥ ७० ॥ नमो सरब द्रस्सं ॥
नमो सरब क्रस्सं ॥ नमो सरब रंगे ॥
त्रिभंगी अनंगे ॥ ७१ ॥ नमो जीव
जीवं ॥ नमो बीज बीजे ॥ अखिज्जे
अभिज्जे ॥ समसतं प्रसिज्जे ॥
७२ ॥ क्रिपालं सरूपे ॥ कुकरमं
प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिद्धि
सिद्धिं निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अम्रित्त करमे ॥ अंब्रित्त धरमे ॥
अखल्ल जोगे॥ अचल्ल भोगे॥७४॥

अचल्ल राजे ॥ अटल्ल साजे ॥
अखल्ल धरमं ॥ अलक्ख करमं
७५ ॥ सरबं दाता ॥ सरबं
गिआता ॥ सरबं भाने ॥ सरबं
माने ॥ ७६ ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं
त्राणं ॥ सरबं भुगता ॥ सरबं जुगता
॥ ७७ ॥ सरबं देवं ॥ सरबं भेवं
सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥ ७८ ॥

रुआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति
अजोनि पुरख अपार ॥ सरब
मान त्रिमान देव अभेव आदि
उदार ॥ सरब पालक सरब

घालक सरब को पुनि काल ॥
जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप
रसाल ॥ ७९ ॥ नाम ठाम न
जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥
आदि पुरख उदार मूरति अजोनि
आदि असेख ॥ देस और न भेस
जाकर रूप रेख न राग ॥ जत्र
तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ
अनुराग ॥ ८० ॥ नाम काम
बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि
॥ सरब मान सरबत्र मान
सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति
अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥

खेल खेल अखेल खेलन अंत
को फिरि एक ॥ ८१ ॥ देव भेव न
जानही जिह बेद और कतेब ॥
रूप रंग न जाति पाति सु जानई
किंह जेब ॥ तात मात न जात
जाकर जनम मरन बिहीन ॥
चक्र बक्र फिरै चतुर चक्क मानही
पुर तीन ॥ ८२ ॥ लोक चौदह के
बिखै जग जापही जिह जाप ॥
आदि देव अनादि मूरति थापिओ
सबै जिह थापि ॥ परमरूप पुनीत
मूरति पूरन पुरख अपार ॥
सरब बिस्व रचिओ सुयंभव गड़न

भंजनहार ॥ ८३ ॥ काल हीन
कला संजुगति अकाल पुरख
अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहित
अभूत अलख अभेस॥ अंग राग न
रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥
गरब गंजन दुसट भंजन मुकति
दाइक काम ॥ ८४ ॥ आप रूप
अमीक अन उसतति एक पुरख
अवधूत ॥ गरब गंजन सरब
भंजन आदि रूप असूत ॥
अंग हीन अभंग अनातम एक
पुरख अपार ॥ सरब लाइक
सरब घाइक सरब को प्रतिपार

॥ ८५ ॥ सरब गंता सरब हंता ॥ सरब ते अनभेख ॥ सरब सास्त्र न जानही जिह रूप रंगु अरु रेख ॥ परमबेद पुराण जाकहि नेत भाखत नित्त ॥ कोटि सिंम्रित पुरान सास्त्र न आवई वहु चित्त ॥ ८६ ॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥ आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥ ८७ ॥ अनभउ प्रकास निसदिन अनास ॥ आजानबाह ॥ साहान साह ॥ ८८ ॥ राजान राज ॥ भानान भान ॥ देवान देव ॥

उपमा महान ॥ ८९ ॥ इन्द्रान इन्द्र ॥ बालान बाल ॥ रंकान रंक ॥ कालान काल ॥९०॥ अनभूत अंग आभा अभंग ॥ गति मिति अपार ॥ गुन गन उदार ॥ ९१ ॥ मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥ अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति अखंड ॥ ९२ ॥ आलिस्य करम ॥ आदृस्य धरम ॥ सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥ ९३ ॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे ॥९४॥ हरीअं ॥ करीअं ॥

निरनामे ॥ अकामे ॥ १५ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चतर चक्र करता ॥ चतर चक्र हरता ॥ चतर चक्र दाने ॥ चतर चक्र जाने ॥ १६ ॥ चतर चक्र वरती ॥ चतर चक्र भरती ॥ चतर चक्र पाले ॥ चतर चक्र काले ॥ १७ ॥ चतर चक्र पासे ॥ चतर चक्र वासे ॥ चतर चक्र मानयै ॥ चतर चक्र दानयै ॥ १८ ॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं न भित्रै ॥ १९ ॥ न करमं ॥ न

काए ॥ अजनमं अजाए ॥ १०० ॥
न चित्रै ॥ न मित्रै ॥ परे हैं ॥ पवित्रै
॥ १०१ ॥ पृथीसै ॥ अदीसै ॥
अद्दसै ॥ अकृसै ॥ १०२ ॥

भगवती छंद ॥ तव प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै ॥ कि आभिज्ज
भेसै ॥ कि आगंज करमै ॥ कि
आभंज भरमै ॥ १०३ ॥ कि
आभिज्ज लोकै॥ किआदित्त सोकै ॥
कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूत
करनै ॥१०४॥ कि राजं प्रभा हैं ॥
कि धरमं धुजा हैं ॥ कि आसोक
बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥

१०५ ॥ कि जगतं कृती हैं ॥
कि छत्रं छत्री हैं ॥ कि ब्रहमं सरूपै
॥ कि अनभउ अनूपै ॥ १०६ ॥
कि आदि अदेव हैं ॥ कि आपि
अभेव हैं ॥ कि चित्रं बिहीनै ॥
कि एकै अधीनै ॥ १०७ ॥ कि
रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥ कि ग़ैबुल
ग़ैब हैं ॥ १०८ ॥ कि अफ़ूअल
गुनाह हैं ॥ कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी
दिहंद हैं ॥ १०९ ॥ कि राज़क
रहीम हैं ॥ कि करमं करीम

हैं ॥ कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली हैं ॥ ११० ॥ कि सरबत्र मानियै ॥ कि सरबत्र दानियै ॥ कि सरबत्र गउनै ॥ कि सरबत्र भउनै ॥ १११ ॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र साजै ॥ ११२ ॥ कि सरबत्र दीनै ॥ कि सरबत्र लीनै ॥ कि सरबत्र जाहो॥कि सरबत्र भाहो ॥ ११३ ॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र कालै ॥ कि सरबत्र. पालै ॥११४॥ कि सरबत्र

हंता ॥ कि सरबत्र गंता ॥ कि सरबत्र भेखी ॥ कि सरबत्र पेखी ॥११५॥ कि सरबत्र काजै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र सोखै कि सरबत्र पोखै ॥ ११६ ॥ कि सरबत्र त्राणै ॥ कि सरबत्र प्राणै ॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ ११७ ॥ कि सरबत्र मानियैं ॥ सदैवं प्रधानियैं ॥ कि सरबत्र जापियै ॥ कि सरबत्र थापियै ॥ ११८ ॥ कि सरबत्र भानै ॥ कि सरबत्र मानै ॥ कि सरबत्र इन्द्रै ॥ कि सरबत्र

चन्द्रै ॥ ११९ ॥ कि सरबं कलीमै ॥ कि परमं फ़हीमै ॥ कि आकल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥ १२० ॥ कि हुसनल वजू हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥ हमेसुल सलामै ॥ सलीखत मुदामै ॥ १२१ ॥ ग़नीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥ बिलंदुल मकानै ॥ ज़मीनुल ज़मानै ॥ १२२ ॥ तमीज़ुल तमामैं ॥ रुजूअल निधानैं ॥ हरीफ़ुल अजीमैं ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥ १२३ ॥ अनेकुल तरंग हैं ॥

अभेद हैं ॥ अभंग हैं ॥ अज़ीज़ुल
निवाज़ हैं ॥ ग़नीमुल ख़िराज
हैं ॥ १२४ ॥ निरुकत सरूप हैं ॥
त्रिमुकति बिभूत हैं ॥ प्रभुगति
प्रभा हैं ॥ सुजुगति सुधा हैं ॥
१२५ ॥ सदैवं सरूप हैं ॥ अभेदी
अनूप हैं ॥ समसतो पराज हैं ॥
सदा सरब साज हैं ॥ १२६ ॥
समसतुल सलाम हैं ॥ सदैवल
अकाम हैं ॥ निर्बाध सरूप हैं ॥
अगाध हैं ॥ अनूप हैं ॥१२७॥
ओअं आदि रूपे ॥ अनादि
सरूपै ॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी

त्रिकामे ॥ १२८ ॥ त्रिबरगं त्रिबाधे ॥ अगंजे अगाधे॥सुभं सरब भागे ॥ सु सरबा अनुरागे ॥ १२९ ॥ त्रिभुगत सरूप हैं ॥ अछिज हैं अछूत हैं ॥ कि नरकं प्रणास हैं ॥ पृथीउल प्रवास हैं ॥ १३० ॥ निरुकति प्रभा हैं ॥ सदैवं सदा हैं ॥ बिभुगति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३१ ॥ निरुकति सदा हैं ॥ बिभुगति प्रभा हैं ॥ अनउकति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३२ ॥

चाचरी छंद ॥

अभंग हैं ॥ अनंग हैं ॥ अभेख
हैं ॥ अलेख हैं ॥ १३३ ॥ अभरम
हैं ॥ अकरम हैं ॥ अनादि हैं ॥
जुगादि हैं ॥ १३४ ॥ अजै हैं ॥
अबै हैं ॥ अभूत हैं ॥ अधूत हैं ॥
१३५ ॥ अनास हैं ॥ उदास हैं ॥
अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥ १३६ ॥
अभगत हैं ॥ बिरकत हैं ॥ अनास
हैं ॥ प्रकास हैं ॥ १३७ ॥ निचिंत
हैं ॥ सुनित हैं ॥ अलिक्ख हैं ॥
अदिक्ख हैं ॥१३८॥ अलेख हैं ॥
अभेख हैं॥ अढाह हैं॥ अगाह हैं॥

१३९ ॥ असंभ हैं ॥ अगंभ हैं ॥ अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥ १४० ॥ अनित्त हैं ॥ सुनित्त हैं ॥ अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥ १४१ ॥

चरपर छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥ सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥ १४२ ॥ सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥ १४३ ॥ सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥ सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥ १४४ ॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे
अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥
१४५ ॥ प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा
सरब साथे ॥ अगाध सरूपे ॥
निरबाध बिभूते ॥१४६॥ अनंगी
अनामे॥त्रिभंगी त्रिकामे ॥ निरभंगी
सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥ १४७ ॥
न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न
मित्रै ॥ न तातै न मातै ॥ न
जातै न पातै ॥ १४८ ॥ निरसाकं
सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥
सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा

हैं ॥ १४१ ॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर हैं ॥ कि हाज़र हज़ूर हैं ॥ हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल कलाम हैं ॥ १५० ॥ कि साहिब दिमाग़ हैं ॥ कि हुसनल चराग़ हैं ॥ कि कामल करीम हैं ॥ कि राज़क रहीम हैं ॥ १५१ ॥ कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥ कि राज़क रहिंद हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनल जमाल हैं ॥ १५२ ॥ ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥ गरीबुल निवाज़ हैं ॥ हरीफ़ुल

शिकंन हैं ॥ हिरासुल फिकंन हैं ॥ १५३ ॥ कलंकं प्रणास हैं ॥ समसतुल निवास हैं ॥ अगंजुल गनीम हैं ॥ रज़ाइक रहीम हैं १५४ ॥ समसतुल जुबां हैं ॥ कि साहिब किरां हैं ॥ कि नरकं प्रणास हैं ॥ बहिसतुल निवास हैं ॥ १५५ ॥ कि सरबुल गवंन हैं ॥ हमेसुल रवंन हैं ॥ तमामुल तमीज हैं ॥ समसतुल अजीज हैं ॥ १५६ ॥ परं परम ईस हैं ॥ समसतुल अदीस हैं ॥ अदेसुल अलेख हैं ॥ हमेसुल अभेख हैं ॥

१५७ ॥ ज़मीनुल ज़मा हैं ॥ अमीकुल इमा हैं॥ करीमुल कमाल हैं॥ कि जुरअति जमाल हैं॥१५८॥ कि अचलं प्रकास हैं ॥ कि अमितो सुबास हैं ॥ कि अजब सरूप हैं ॥ कि अमितो बिभूत हैं ॥१५९॥ कि अमितो पसा हैं ॥ कि आतम प्रभा हैं ॥ कि अचलं अनंग हैं ॥ कि अमितो अभंग है ॥ १६० ॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥ गुनि गन मुदाम ॥ अरिबर अगंज ॥ हरिनर प्रभंज ॥ १६१ ॥ अन गन प्रनाम

॥ मुनि मनि सलाम ॥ हरि नर
अखंड ॥ बरनर अमंड ॥ १६२ ॥
अनभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास
॥ गुनि गुन प्रनाम ॥ जल थल
मुदाम ॥१६३॥ अनछिज्ज अंग ॥
आसन अभंग ॥ उपमा अपार
गति मिति उदार ॥ १६४ ॥ जल
थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥
जल थल महंत ॥ दिस विस
बिअंत ॥ १६५ ॥ अनभव अनास
धृत धर धुरास ॥ आजान बाहु ॥
एकै सदाहु ॥ १६६ ॥ ओअंकार
आदि ॥ कथनी अनादि ॥ खल

खंड खिआल ॥ गुरबर अकाल
॥ १६७ ॥ घर घरि प्रनाम ॥
चित चरन नाम ॥ अनछिज्ज गात
॥ आजिज न बात ॥ १६८ ॥
अनझंझ गात ॥ अनरंज बात ॥
अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार
१६९ ॥ आडीठ धरम ॥ अति
ढीठ करम ॥ अणब्रिण अनंत ॥
दाता महंत ॥ १७० ॥

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥
खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥
१७१ ॥ जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर

हैं ॥ कलि कारण हैं ॥ सरब उबारण हैं ॥ १७२ ॥ धृत के धरण हैं ॥ जग के करण हैं ॥ मन मानिय हैं ॥ जग जानिय हैं ॥ १७३ ॥ सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं ॥ सरब पासिय हैं ॥ सरब नासिय हैं ॥ १७४ ॥ करुणा कर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥ सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥ १७५ ॥ ब्रहमंडस हैं ॥ खल खंडस हैं ॥ पर ते पर हैं ॥ करुणा कर हैं ॥ १७६ ॥ अजपा जप हैं ॥ अथपा थप हैं ॥

अकृता कृत हैं ॥ अंमृता मृत
हैं ॥ १७७ ॥ अमृता मृत हैं ॥
करुणा कृत हैं ॥ अकृता कृत
हैं ॥ धरणी धृत हैं ॥ १७८ ॥
अमृतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥
अकृता कृत हैं ॥ अमृता
मृत हैं ॥ १७९ ॥ अजबा कृत
हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥ नर नाइक
हैं ॥ खल घाइक हैं ॥ १८० ॥
विस्वंभर हैं ॥ करुणालय हैं ॥
नृप नाइक हैं ॥ सरब पाइक
हैं ॥ १८१ ॥ भवभंजन हैं ॥
अरि गंजन हैं ॥ रिपु तापन

हैं ॥ जपु जापन हैं ॥ १८२ ॥
अकलं कृत हैं ॥ सरबा कृत हैं ॥
करता कर हैं ॥ हरता हरि
हैं ॥ १८३ ॥ परमातम हैं ॥
सरबातम हैं ॥ आतम बस हैं ॥
जस के जस हैं ॥ १८४ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो बृंद बृंदे नमो बीज बीजे ॥
१८५ ॥ नमो राजसं तामसं सांत
रूपे ॥ नमो परम तत्तं अतत्तं

सरूपे ॥ नमो जोग जोगे नमो
ज्ञान ज्ञाने ॥ नमो मंत्र मंत्रे
नमो धिम्रान धिम्राने ॥ १८६ ॥
नमो जुद्ध जुद्धे ॥ नमो ज्ञान
ज्ञाने ॥ नमो भोज भोजे नमो
पान पाने ॥ नमो कलह करता
नमो सांत रूपे ॥ नमो इंद्र इंद्रे ॥
अनादं बिभूते ॥१८७॥ कलंकार
रूपे अलंकार अलंके ॥ नमो
आस आसे नमो बांक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे
॥ १८८ ॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥
१८९ ॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥
अकास ॥१९०॥ अगंज ॥ अभंज ॥
अलक्ख॥ अभक्ख ॥१९१॥ अकाल
॥ दिआल॥ अलेख॥ अभेख॥१९२॥
अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥
अढाह ॥१९३॥ अनाथे ॥ प्रमाथे ॥
अजोनी ॥ अमोनी ॥ १९४ ॥
न रागे ॥ न रंगे ॥ न रूपे ॥ न रेखे
॥ १९५ ॥ अकरमं ॥ अभरमं ॥
अगंजे ॥ अलेखे ॥ १९६ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल

प्रणासे ॥ अगंजुल अनामे समस-
तुल निवासे ॥ निरकामं बिभूते
समसतुल सरूपे ॥ कुकरमं
प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥११७॥
सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥
करीमुलकुनिंदा समसतुल निवासी
॥ अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे
॥ हरीअं करीअं करीमुल रहीमे
॥११८॥ चतर चक्र वरती चतर
चक्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा
सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी
दिआलं सरूपे ॥ सदा अंग संगे ॥
अभंगं बिभूते ॥ ११९ ॥

() शबद हज़ारे पा० १० ॥ ()

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली पातिसाही १० ॥

रे मन ऐसो कर संनिआसा ॥ बन से सदन सबै कर समझहु मन ही माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत की जटा जोगको मंजनु नेमकेनखन बढाओ ॥ ज्ञान गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ ॥ १ ॥ अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ॥ सील

संतोख सदा निरबाहिबो हैब्बो
त्रिगुण अतीति ॥ २ ॥ काम क्रोध
हंकार लोभ हठ मोह न मन सिउ
ल्यावै ॥ तबहीं आतम ततको
दरसे परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातिशाही १० ॥

रे मन इह बिधि जोगु कमाओ ॥
सिङीसाच अकपट कंठला धिआन
बिभूत चढ़ाओ ॥१॥ रहाउ ॥ ताती
गहु आतम बसि करकी भिछा
नाम अधारं ॥ बाजे परम तार ततु
हरि को उपजै राग रसारं ॥ १ ॥
उघटै तान तरंग रंगि अति

गिआन गीत बंधानं ॥ चकि चकि
रहे देव दानव मुनि छकि छकि
बयोम बिवानं ॥ २ ॥ आतम उपदेस
भेस संजम को जापु सु अजपा
जापै ॥ सदा रहै कंचन सी काइआ
काल न कबहूं ब्यापै ॥ ३ ॥ २ ॥

रामकली पातिसाही १० ॥

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥
सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं
सुचितह्वैजागो ॥१॥ रहाउ॥ औरन
कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध
न लागो॥ सिंचत कहा परे बिखयन
कहिकबहूं बिखैरस तिआगो ॥ १ ॥

केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥ संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥ २ ॥ जाते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥ जो सुख चाहो सदा सभन कौ तो हरि के रस पागो ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि पातिसाही १० ॥

प्रभ जू तोकह लाज हमारी ॥ नील कंठ नर हरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परम पुरख प्रमेस्वर सुआमी पावन पउन अहारी ॥

माधव महा जोति मध मरदन मान मुकंद मुरारी ॥ १ ॥ निरबिकार निरजुर निंद्रा बिनु निरबिख नरक निवारी ॥ कृपा सिंध काल त्रैदरसी कुकृतप्रनासनकारी ॥ २ ॥ धनुरपानि धृतमान धराधर अन बिकार असिधारी ॥ हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥ ३ ॥ ४ ॥

राग कलिआण पातिसाही १० ॥

बिन करतार न किरतम मानो ॥ आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ॥१॥ रहाउ ॥

क़हा भइश्रो जो श्रान जगत मै दसक असुर हरिघाए ॥ अधिक परपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहम कहाए ॥ १ ॥ भंजन गढ़न समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ॥ तांते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ॥ २ ॥ कैसे तोहि तारि है सुनि जड़ आप डुबियो भव सागर ॥ छुटहो काल फास ते तबही गहो सरनि जगतागर ॥ ३ ॥ ५ ॥

खिआल पातिसाही १० ॥

मित्र पिआरे नू हालु मुरीदां

दा कहणा ॥ तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढणा नाग निवासां दे रहणा ॥ सूल सुराही खंजरु पिआला बिंग कसाईआं दा सहणा ॥ यारड़े दा सानूं सथरु चंगा भठ खेड़िआ दा रहणा ॥ १ ॥ ६ ॥

तिलंग काफी पातिसाही १० ॥

केवल कालई करतार ॥ आदि अंत अनंत मूरति गड़न भंजन हार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंद उसतत जउन के सभ सत्र मित्र न कोइ ॥ कउन बाट परी तिसै पथ सारथी

रथ होइ ॥ १ ॥ तात मात न
जात जाकर पुत्र पौत्र मुकंद ॥
कउन काज कहाइंगे आन
देवकि नंद ॥ २ ॥ देव दैत दिसा
विसा जिह कीन सरब पसार ॥
कौन उपमा तउन को मुख लेत
नामु मुरार ॥ ३ ॥ ७ ॥

राग बिलावल पातिसाही १० ॥

सो किम मानस रूप कहाए ॥
सिध समाध साध कर हारे क्यो
हूं न देखन पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥
नारद बिआस परासर ध्रूअ से
धिआवत धिआन लगाए ॥ बेद

पुरान हार हठ छाडिओ तदपि धिआन न आए ॥ १ ॥ दानव देव पिसाच प्रेत्त ते नेतहि नेत कहाए ॥ सूछम ते सूछम कर चीने बृधन बृध बताए ॥ २ ॥ भूमि अकास पताल सभै सजि एक अनेक सदाए ॥ सो नर काल फास ते बाचे जो हरि सरणि सिधाए ॥३॥१॥८॥३२॥

राग देव गंधारी पातिसाही १० ॥

इक बिन दूसर सो न चिनार ॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभ जानत है करतार ॥ रहाउ ॥

कहा भइओ जो अतहित चित करबहु बिध सिला पुजाई ॥ प्रान थकिओ पाहिन कहि परसत कछु कर सिध न आई ॥ १ ॥ अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खैहै ॥ तामै कहा सिध है रे जड़ तोहि कछू बर दै है ॥२॥ जौ जीअ होत तौ देत कछू तुहि कर मनबच करम बिचार॥ केवल एक सरण सुआमी बिन यौ नहि कतहि उधार ॥ ३ ॥ १ ॥

राग देवगंधारी पातसाही १० ॥

बिन हरि नाम न बाचन पै है ॥ चौदह लोक जाहि बसकीने ताते

कहा पलै है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम रहीम उबार न सकहै जाकर नाम रटै है ॥ ब्रह्मा बिसन रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबै है ॥ १ ॥ बेद पुरान कुरान सबै मत जाकह नेत कहै है ॥ इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु धिआवत धिआन न ऐ है ॥ २ ॥ जाकर रूप रंग नहि जनियत सो किम स्याम कहै है ॥ छुटहो काल जाल ते तब ही तांहि चरन लपटै है ॥ ॥ ३ ॥ १० ॥

त्व प्रसादि सवय्ये

१ ओं श्री वाहिगुरू जी की फतह ॥
पातिशाही १० ॥
(अकाल उसतति विचों)

स्रावग सुद्ध समूह सिद्धान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥ सूर सूरारदन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥ सारेही देसको देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रान पती के ॥ श्री भगवान की भाइ क्रिपा हूंते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥

माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥ कोट

तुरंग कुरंग से कूद्दत पउन के गउन को जात निवारे ॥ भारी भुजान के भूप भली बिधि निग्रावत सीस न जात बिचारे ॥ एते भए तु कहा भए भूपति ग्रंत को नांगेही पांइपधारे।२।

जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल मृदंग नगारे ॥ गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे ॥ भूत भविक्ख भवान के भूपत कउनु गनै नहीं जात बिचारे ॥ श्री पति श्री भगवान भजे बिनु ग्रंत को ग्रंत के धाम सिधारें ॥ ३ ॥

तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखे ॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखे ॥ पउन अहार जती जतधार सबै सु बिचार हजारक देखे ॥ श्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखे ॥४॥

सुद्ध सिपाह दुरंत दुबाह सु साज सनाह दुरजान दलैंगे ॥ भारी गुमान भरे मन मैं करपरबत पंख हले न हलैंगे ॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगनि मान मलैंगे ॥ श्री पति श्री भगवान कृपा

बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ॥५॥ बीर अपार बडे बर आर अबिचारहि सार की धार भछय्या ॥ तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या ॥ गाढ़े गढ़ान को तोड़न हार सु बातन ही चक चार लवय्या ॥ साहिबु श्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवय्या ॥ ६ ॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविक्ख भवान जपैगे ॥ जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सब थाप थपैगे ॥ पुंन प्रतापन

बाद जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७॥ मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोटि स्नान गजादिक दान अनेक सुअबर साज बरैंगे ॥ ब्रह्ममहेसर बिसन सची पति अंतफसे जम फास परैंगे ॥ जे नर श्रीपति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥ ८ ॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए

सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइयो ॥ बास कीओ बिखिआन सों बैठकै ऐसे हीऐसे सु बैसबिताइओ ॥ साचु कहों सुनलेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९॥

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥ काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाहकोसीसु निवाइओ ॥कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ मृतान को पूजन धाइओ ॥ कूरक्रिआ उरझिओ सभही जग श्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥

त्व प्रसादि सवय्ये

दीनन की प्रतिपाल करै नित संत उबार गनीमन गारै ॥ पच्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥ पोखत है जल मै थल मै पल मै कल के नहीकरम बिचारै ॥ दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥१॥ दाहत है दुख दोखन कौ दल दुजन के पल मै दल डारै ॥ खंड अखंड प्रचंड पहारन पूरन प्रेम की प्रीत सभारै ॥ पार

न पाइ सकै पद्मापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥ रोजी ही राज बिलोकत राजक रोख रूहान की रोजी न टारै ॥ २ ॥ कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविक्ख भवान बनाए ॥ देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ॥ बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥ पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन श्री पद्मापति पाए ॥ ३ ॥ आदि अनंत अगाध अद्वैखसुभूत भविक्ख भवान अभै है ॥ अंति

बिहीन अनातम आप अदाग
अदोख अछिद्र अछै है॥ लोगन
के करता हरता जल मै थल मै
भरता प्रभ वै है ॥ दीन दइआल
दइआ कर श्री पति सुंदर श्री
पदमापति ए है ॥ ४ ॥ काम न
क्रोध न लोभ न मोह न रोग न
सोग न भोग न भै है ॥ देह
बिहीन सनेह सभो तन नेह
बिरकत अगेह अछै है॥ जानको
देत अजान को देत जमीन को
देत जमान को दै है ॥ काहे को
डोलत है तुमरी सुध सुंदर श्री

पद्मापति लै है ॥ ५ ॥ रोगन ते
अर सोगन ते जल जोगन ते बहु
भांति बचावै ॥ सत्र अनेक चलावत
घाव तऊ तन एक न लागन पावै
॥ राखत है अपनो कर दैकर पाप
संबूह न भेटन पावै ॥ और की
बात कहा कह तोसौ सु पेट ही के
पट बीच बचावै ॥ ६ ॥ जच्छ भुजंग
सु दानव देव अभेव तुमै सबही
कर धिआवै ॥ भूमि अकास पताल
रसातल जच्छ भुजंग सभै सिर
निआवै ॥ पाइ सकै नही पार
प्रभाहू का नेत ही नेतह बेद

बतावै ॥ खोज थके सभही खुजीआ सुरहार परे हरि हाथ न आवै ॥७॥ नारद से चतुरानन से रुमनारिख से सभहूं मिलि गाइओ ॥ बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हार परे हरि हाथ न आइओ ॥ पाइ सकै नही पार उमापति सिध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥ धिआन धरो तिहको मन मैं जिह को अमितोजि सभैजगु छाइओ॥८॥ बेद पुरान कतेब कुरान अभेद नृपान सभै पचहारे ॥ भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है

अनछेद पुकारे ॥ राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संगि तिहारे ॥ आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिनही कुल तारे ॥ ६ ॥ तीरथ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ॥ देस फिरिओ कर भेस तपो धन के सधरे न मिले हरि पिआरे ॥ आसन कोट करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ॥ दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ॥ १० ॥

अनंदु

रामकली महला ३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सति
गुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त
पाइआ सहज सेती मनि वजीआ
वाधाईआ ॥ राग रतन परवार
परीआ सबद गावण आईआ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा
मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै
नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै
पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ
तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि

नालि रहु तूं मंन मेरे दूख सभि
विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे
तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी
सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै
नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि
नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ
नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै
सभु किछु है जिसु देहि सु
पावए ॥ सदा सिफति सलाह
तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु
जिनकै मनि वसिआ वाजे
सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे

साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु
नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि
गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि
आइ वसिआ जिनि इछा सभि
पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता
गुरू विटहु जिसदीआ एहि
वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु
संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा
नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच
सबद तितु घरि सभागै॥घरि सभागै
सबद वाजे कला जितु घरि
धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते

कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि
पाइआ तुधु जिनकउ सि नामि हरि
कै लागे॥कहै नानकु तहसुखु होआ
तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ साची
लिवैबिनु देह निमाणी॥देहनिमाणी
लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा
करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु
थाउ नाही सबदि लागिसवारीआ॥
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे
वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनंदु आनंदु
सभु को कहैआनंदुगुरूते जाणिआ॥
जाणिआ अनंदु सदा गुर ते क्रिपा

करे पिआरिआ ॥ करि किरपा
किलविख कटे गिआन अंजनु
सारिआ ॥ अंदरहु जिनका मोहु
तुटा तिनका सबदु सचै सवारिआ
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु
गुर ते जाणिआ ॥७॥ बाबा जिसु
तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त
सो जनु देहि जिसनो होरि किआ
करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि
भूले फिरहि दहदिसि इकि नामि
लागि सवारिआ ॥ गुरपरसादी
मनु भइआ निरमलु जिना भाणा
भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि

पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥
आवहु संत पिआरिहो अकथ की
करह कहाणी ॥ करहा कहाणी
अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ
हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु
मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु
अकथ कहाणी ॥९॥ ए मन चंचला
चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई
न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ
॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु
भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त

मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली
पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै
विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई
किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए
मन पिआरिआ तू सदा सचु
समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा
चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि
तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ
चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले
न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू
होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन

पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥
अगम अगोचरा तेरा अंतु
न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ
किनै तेरा आपणा आपु तू
जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु
तेरा किआ को आखि वखाणए ॥
आखहि त वेखहि सभु तू है जिनि
जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू
सदा अगंमु है तेरा अंतु न
पाइआ ॥१२॥ सुरि नर मुनि
जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु
गुर ते पाइआ ॥ पाइआ
अंम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा

मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिसनो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥
भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु

तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥ एहु सोहिला

सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा
सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ
॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ
जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला
गली किनै न पाइआ ॥ कहै
नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू
सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए
से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए
गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
पवितु माता पिता कुटंब सहित
सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥

कहदे पवितु सुणदे पवितु से
पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥
कहै नानकु से पवितु जिनी गुर
मुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥
करमी सहजु न ऊपजै विणु
सहजै सहसा न जाइ ॥ नह
जाइ सहसा कितै संजमि रहे
करम कमाए ॥ सहसै जीउ
मलीणु है कितु संजमि धोता
जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु
हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुरपरसादी
सहजु उपजै इहु सहसा इव

जाइ ॥ १८ ॥ जीअहु मैले बाहरहु
निरमल ॥ बाहरहु निरमल
जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ
हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु
लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा
महि नामु उतमु सो सुणहि नाही
फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै
नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे
तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥
जीअहु निरमल बाहरहु
निरमल ॥ बाहरहु त निरमल
जीअहु निरमल सतिगुर ते
करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ

पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥
जनमु रतनु जिनी खटिआ
भले से वणजारे ॥ कहै नानकु
जिन मंनु निरमलु सदा रहहि
गुर नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु
गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त
सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै
गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै
धिआए अंतर आतमै समाले ॥
आपु छडि सदा रहै परणै गुर
बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै
नानकु सुणहु संतहु सो सिखु
सनमुखु होए ॥ २१ ॥ जे को गुर

ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर
मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न
होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ
जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै
विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥
फिरि मुकति पाए लागि चरणी
सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै
नानकु वीचारि देखहु विणु
सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥
आवहु सिख सतिगुरू के
पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी
बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन

कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिग पाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एहु सची बाणी ॥ २३ ॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥

कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर
कची बाणी ॥ २४ ॥ गुर का
सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
सबदु रतनु जितु मंनु लागा
एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती
मनु मिलिआ सचै लाइआ
भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे
जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु
सबदु रतनु है हीरा जितु
जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव सकति
आपि उपाइ कै करता आपे
हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए
आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥

तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ सिमृति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहै

नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥ २७ ॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ ॥ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओसनो किहु पोहि न सकी जिसनउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥ जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि

माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिवलागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ २१ ॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाए ॥

ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो
सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥
जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै
हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि
अमुलकु है भाग तिना के नानका
जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा
सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि
हरि नित जपिहु जीअहु लाहा
खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना
मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु

होआ वणजारा ॥ ३१ ॥ ए
रसना तू अनरसि राचि रही
तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस
न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि
रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु
पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि
न तृसना लागै आइ ॥ एहु
हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु
मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु
होरि अनरस सभि वीसरे जा
हरि वसै मनि आइ ॥ ३२ ॥ ए
सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति
रखी ता तू जग महि आइआ ॥

हरि जोति रखी तुधु विचि ता
तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे
माता आपे पिता जिनि जीउ
उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर
परसादी बुझिआ ता चलतु होआ
चलतु नदरी आइआ ॥ कहै
नानकु सृसटि का मूलु रचिआ
जोति राखी ता तू जग महि
आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ
भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥
हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु
बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित
सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥

गुर चरन लागे दिन सभागे
आपणा पिरु जापए ॥ अनहत
बाणी गुर सबदि जाणी
हरिनामु हरि रसु भोगो ॥ कहै
नानकु प्रभु आपि मिलिआ
करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए
सरीरा मेरिआ इसु जग महि
आइकै किआ तुधु करम कमाइआ
॥ कि करम कमाइआ तुधु
सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ
सो हरि मनि न वसाइआ ॥
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ

पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै
नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु
लाइआ ॥ ३५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो
हरि तुम महि जोति धरी हरि
बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि
बिनु अवरु न देखहु कोई
नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु
विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि
का रूपु है हरि रूपु नदरी
आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ
जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु
अवरु न कोई ॥ कहै नानकु

एहि नेत्र अंध से सतिगुरि
मिलिऐ दिब द्रसटि होई ॥ ३६ ॥
ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो
पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए
सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ
रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख
विडाणी ताकी गति कही न जाए
॥ कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु
पवित्र होवहु साचै सुनणै नो
पठाए ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा
अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजा-
इआ ॥ वजाइआ वाजा पउण

नउ दुआरे परगटु कीए दसवा
गुपतु रखाइआ ॥ गुर दुआरै
लाइ भावनी इकना दसवा
दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक
रूप नाउ नवनिधि तिसदा अंतु
न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु
हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि
रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
३८ ॥ एहु साचा सोहिला साचै
घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला
घरि साचै जिथै सदा सचु धिआ-
वहे ॥ सचो धिआवहि जा
तुधु भावहि गुरमुखि जिना

बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का
खसमु है जिसु बखसे सो जनु
पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला
सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥ अनदु
सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ
पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ
उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग
संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर
ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते
पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे
वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

ः ० रहिरास ः ०

सलोकु म० १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तू करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

सोदरु रागु आसा महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावण हारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखिलिखि धरमु बीचारे॥

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी
सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि
तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ
दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध
समाधी अंदरि गावनि तुधनो
साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो
जती सती संतोखी गावनि तुधनो
वीर करारे ॥ गावनि तुधनो
पंडित पढ़नि रखीसुर जुगु जुगु
वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो
मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु
मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो
रतन उपाए तेरे अठसठि

तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध
महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी
चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल
ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥
सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि
रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते
तुधनो गावनि से मै चिति न
आवनि नानकु किआ बीचारे॥ सोई
सोई सदा सचु साहिबु साचा साची
नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी
भाती करि करि जिनसी माइआ
जिनि उपाई ॥ करि करि देखै

कीता आपणा जिउ तिसदी वडिआई॥जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि

सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिम्रानी धिम्रानी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिम्राई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिम्राईम्रा ॥ सिधा पुरखा कीम्रा वडिम्राईम्रा ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईम्रा ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईम्रा ॥ ३ ॥ म्राखण वाला किम्रा वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किम्रा चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा महला १ ॥

आखा जीआ विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा

रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ॥ ना को होआ ना को होइ ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करिकै कीती राति॥खसमु विसारहि ते कमजाति॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सत पुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति

नामु मेरा प्रान सखाई हरि
कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥
रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग
वडेरे जिन हरि हरि सरधा
हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु
मिलै तृपतासहि मिलि संगति
गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि
हरि हरि रसु नामु न पाइआ
ते भागहीण जम पासि ॥ जो
सतिगुर सरणि संगति नही आए
धृगु जीवे धृगु जीवासि ॥ ३ ॥
जिन हरि जन सतिगुर संगति
पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ

लिखासि ॥ धनु धंनु सत संगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ताका रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सत संगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता

कोइ न किसकी धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारा परिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको

पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ

जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन
सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि
जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से
धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ
जी जनु नानकु तिन बलि जासी
॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति
भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि
तुधु जी हरि अनिक अनेक
अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी
अनिक करहि हरि पूजा जी तपु
तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक

तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति
सासत जो करि किरिआ खटु
करम करंता ॥ से भगत से भगत
भले जन नानक जी जो भावहि मेरे
हरि भगवंता ॥४॥ तूं आदि पुरखु
अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु
अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु
एको सदा सदा तूं एको जी तूं
निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे
भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि
सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ
उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ
गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते

के जी जो सभसै काजा णोई॥५॥१॥

आसा महला ४ ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिसनो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा

खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ
सजोगी मेलु॥२॥ज़िसनो तू जाणा-
इहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण
सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि
हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
सहजे ही हरिनामि समाइआ ॥३॥
तू आपे करता तेरा कीआ सभु
होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न
कोइ ॥ तू करि करि वेखहि
जाणहि सोइ ॥ जन नानक
गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भई ले

निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ ४ ॥

कबियो बाच बेनती चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥ पूरन होइ चित की इच्छा ॥

तव चरनन मन रहै हमारा ॥
अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥
हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥
आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परिवारा ॥
सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥ २ ॥
मो रच्छा निज कर दै करिऐ ॥
सभ बैरन कौ आज संघरिऐ ॥
पूरन होइ हमारी आसा ॥
तोर भजन की रहै पिआसा ॥ ३ ॥
तुमहि छाडि कोई अवरन धिआऊं॥
जो बर चहों सु तुमते पाऊं ॥
सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥

चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥
४ ॥ आप हाथ दै मुझै उबरिऐ ॥
मरन काल का त्रास निवरीऐ ॥
हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ श्री
असिधुज जू करियहु रच्छा ॥५॥
राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥
साहिब संत सहाइ पियारे ॥
दीन बंधु दुसटन के हंता ॥
तुमहो पुरी चतुर दस कंता ॥ ६ ॥
काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥
काल पाइ सिवजू अवतरा ॥
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥
सकल काल का कीआ तमासा॥७॥

जवन काल जोगी सिव कीओ ॥
बेदराज ब्रहमा जू थीओ
जवन काल सभ लोक सवारा ॥
नमसकार है ताहि हमारा ॥ ८ ॥
जवन काल सभ जगत बनायो ॥
देव दैत जच्छन उपजायो ॥ आदि
अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरू
समझियहु हमारा ॥ ९ ॥ नमसकार
तिसही को हमारी ॥ सकल प्रजा
जिन आप सवारी ॥ सिवकन को
सिवगुन सुख दीओ ॥ सत्रुन को
पल मो बध कीओ ॥ १० ॥ घट
घट के अंतर की जानत ॥ भले

बुरे की पीर पछानत ॥ चीटी ते
कुंचर असथूला ॥ सब पर
कृपा द्रसटि कर फूला ॥ ११ ॥
संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख
पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक
की पीर पछानै ॥ घट घट के
पट पट की जानै ॥ १२ ॥ जब
उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा
धरत तब देह अपारा ॥ जब
आकरख करत हो कबहू ॥ तुम मै
मिलत देह धर सभहू ॥ १३ ॥
जेते बदन सृसटि सब धारै ॥
आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम

सब ही ते रहत निरालम ॥ जानत
बेद भेद अर आलम ॥ १४ ॥
निरंकार निरबिकार निरलंभ ॥
आदि अनील अनादि असंभ ॥
ताका मूढ़ उचारत भेदा ॥ जाकौ
भेव न पावत बेदा ॥ १५ ॥
ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥
महा मूढ़ कछु भेद न जानत ॥
महादेव कौ कहत सदा सिव ॥
निरंकार का चीनत नहिभिव॥१६॥
आपु आपनी बुधि है जेती ॥
बरनत भिंन भिंन तुहि
तेती ॥ तुमरा लखा न जाइ

पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ १७ ॥ एकै रूप अनूप सरूपा॥ रंक भयो राव कही भूपा ॥ अंडज जेरज सेतज कीनी॥उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ॥ १८ ॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भयो संकर इकैठा ॥ सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव ॥ आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥१९॥ अब रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिक्ख उबारि असिक्ख संघरो ॥ दुसट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रणघाता ॥२०॥

जे असिधुज तव सरनी परे ॥
तिनके दुसट दुखित ह्वै मरे ॥
पुरख जवन पग परे तिहारे ॥
तिनके तुम संकट सब टारे ॥२१॥
जो कलि को एक बार धिऐ है ॥
ताके काल निकटि नहि ऐ है ॥
रच्छा होइ ताहि सब काला ॥ दुसट
अरिसट टरें ततकाला ॥ २२ ॥
कृपा द्रिसटि तन जाहि
निहरिहो ॥ ताके ताप तनक मो
हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ
होई ॥ दुष्ट छाह छ्वै सकै न कोई
॥ २३ ॥ एक बार जिन तुमै

संभारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा दारिद दुसट दोख ते रहा ॥ २४॥ खड़ग केत मै सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥ २५ ॥ स्वैया ॥ पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिम्रत सासत्र बेद सबै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान

क्रिपा तुमरी करि मै न कहयो सभ तोहि बखान्यो ॥

दोहरा ॥ सगल दुआर कउ छाडिकै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

रामकली महला ३ अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधा-ईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो

त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥

सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिसदीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥
वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला
जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत
तुधु वसि कीते कालु कंटकु
मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ
तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै
लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु
होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥
अनदु सुणहु वडभागीहो सगल
मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ
उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग
संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥

संत साजन भए सरसे पूरे गुर
ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते
पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे
वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ
सतु संतोखु वीचारो ॥ अंम्रित नामु
ठाकुर का पइओ जिसका सभसु
अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै
तिसका होइ उधारो॥एह वसतु तजी
नह जाई नितनित रखु उरिधारो ॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ

सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ तिथै तूं समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जमके दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु

बिखमु असगाह गुरसबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंम्रित सेइ खाहि ॥ कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु समाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥१॥

सलोकु महला ५ ॥

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे

जिसनो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई कइ॥१॥

महला ५ ॥

रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥ २ ॥

अरदास

१ ओं वाहिगुरू जी की फतहि ॥
श्री भगौती जी सहाइ ॥

वार श्री भगौती जी की पातिशाही १० ॥

प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ । फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरिगोबिंद नों सिमरौ श्री हरि राइ ॥ श्री हरि किशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥ तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ॥ सभ थाईं होइ सहाइ ॥दसवां पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी सब थांईं होइ सहाइ॥दसो सत्गुरूओं के ज्योतिस्वरूप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर बोली जी वाहिगुरू!पांच प्यारों, चार साहिबजादों, चालीस मुक्तों,

हठी-जपी-तपियों, जिन्हों ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग वाही, देख कर अडीठ किया, उन प्रेम सत्य वादियों की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू !

जिन सिंह सिंहनियों ने धरम पर बलि-दान दिये अंग अंग कटवाए, सिर की खोपरियों उतरवाईं चर्खियों पर चड़ाए गये, आरों से तन चिरवाए, गुरदवारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धरम नहीं छोड़ा सिख धरम का केशों तथा प्राणों सहित पालिन किया। उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो की वाहिगुरू !

चारों तखतों, समूह गुरदवारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू !

प्रथम सर्व खालसा जी की अरदास है जी

सर्वं खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवै, चित में आने से सर्व सुख हो, जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा रियात, देग तेग फतह, बिरद की लाज पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाइ ।। खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरू ! !

सिखों का मन नरम मति ऊची मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू ! हे नि:मानो के सम्मान, नि: त्राणों के त्राण, नि: ओटों की ओट, निरासरयों के आसरे, सच्चे पिता वाहिगुरू आप की सेवा में .... की प्रार्थना है ।

अक्षर लग मात्र भूल चूक माफ करना सर्व के कार्य सिद्ध हों । उन प्रेमियों का मिलाप हो जिनके मिलने से चित में तेरे नाम का निवास हो ।

नानक नाम चढ़दी कला ।।
तेरे भाणे सर्वत का भला ।।

० सोहिला ०

राग़ु गउड़ी दीपकी महला १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो॥१॥ तुम गावहुमेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि

करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण
असीसड़ीआ जिउ होवै साहिबसिउ
मेलु॥३॥घरिघरि एहो पाहुचा सद्दड़े
नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ
नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

रागु आसा महला १ ॥

छिअ घरछिअ गुर छिअउपदेस॥गुरु
गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै
घरि करते कीरतिहोइ॥सो घरु राखु
वडाई तोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए
चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी
माहु होआ॥सूरजु एकोरुति अनेक॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

राग धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिकामंडल जनक मोती॥धूपु मलआनलो पवणुचवरो करे सगल बनराइ फूलंतजोती ॥१॥ कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥रहाउ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पदगंध बिनु सहस तवगंध इव चलत मोही ॥२॥सभ महि जोति जोति है सोइ॥ तिसदै चानणि सभ महि चानणु

होइ॥गुरसाखी जोति परगटु होइ ॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित
मनोअनदिनुमोहिआही पिआसा॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंगकउ
होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि क्रोधि नगरुबहु भरिआ मिलि
साधू खंडल खंडा हे॥ पूरबि लिखत
लिखेगुरुपाइआ मनिहरिलिव मंडल
मंडाहे ॥१॥ करि साधू अंजुली पुनु
वडाहे॥ करिडंडउत पुनु वडाहे॥१॥
रहाउ॥साकतहरिरससादुनजाणिआ

तिन अंतरि हउमै कंडाहे॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जम कालु सहहि सिरि डंडाहे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भवखंडाहे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडाहे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरेहरि राखु राखु वड वडाहे॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडाहे ॥४॥४॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु

हरिलाहा आगे बसनु सुहेला ॥१॥
अउध घटै दिनसु रैणा रे ॥ मन
गुरमिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ
ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ
पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि
जानी ॥ २ ॥ जाकउ आए सोई
बिहाझहु हरिगुर ते मनहि बसेरा ॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे
बहुरिनहोइगोफेरा ॥३॥ अंतरजामी
पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ
करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

बारह माहा

माझ महला ५ घरु ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ

स्वाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ
मीत सजण सभि जाम ॥ नानक
की बेनंतीआ करि किरपा दीजै
नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि
प्रभ जिसका निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै
अनंदु घणा ॥ संत जना मिलि
पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि
पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि
गणा॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा
बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि
महीअलि पूरिआ रविआ विचि
वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई

कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी रावित्र्या
सो प्रभू तिना भागु मणा ॥ हरि
दरसन कंउ मनु लोचदा नानक
पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो
प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥ २ ॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ
जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु
पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु
॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि
अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि
सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु
हरि के नाम बिनु अगै लईअहि
खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ

बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी
जो लगे तिनकी निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु
परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां
लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु
अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण
दावणि लगिआ किसै न देई बंनि
॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै
नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै
जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े
सोकरे सोई जीअ करंनि॥ जो प्रभि
कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥

आपणा लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिसकै भागु मथंनि ॥ ४ ॥ आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि॥जग जीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिनकौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥

करि किरपा प्रभ आपणी तेरे
दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु
बिनु दूजा को नही नानक की अर-
दासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै
जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥
सावणि सरसी कामणी चरन
कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु
रता सच रंगि इको नामु आधारु ॥
बिखिआ रंगि कूड़ाविआ दिसनि
सभे छारु ॥ हरि अंमृत बूंद
सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ
संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै

नो मनु लोचदा करमि मिलावणा
हारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ
हंउ तिनकै सद बलिहार ॥ नानक
हरि जी मइआ करि सबदि सवारणा
हारु ॥ सावणु तिना सुहागणी
जिन राम नामु उरिहारु ॥ ६ ॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै
लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ
कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि
देह बिनससी तितु वेलै कहसनि
प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत
जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि
खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा

हेतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥ ७ ॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिनकै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिन्नी चाखिआ प्रेम रसु से

तृपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़िलाइ ॥ जोहरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभविणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मईआ हरि राइ ॥ ८ ॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होए गउ जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि

सकै किसथै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साध संगु बिनसहि सभे सोच ॥ १ ॥

मघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिनकी सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह

॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी रावित्रा प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभु सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा

साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ
सेवा सुआमी लाहु॥ बिखिआ पोहि
न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची
प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी
पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ी-
आहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ
हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम
पई नाराइणै नानक दरि पई-
आहु ॥ पोखु सोहंदा सरब सुख
जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥
माघि मजनु संगि साधूआ
धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का

नामु धिआइ सुणि सभना नो
करि दानु ॥ जनम करम मलु
उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि
करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु
सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ
उसतति करे जहानु ॥ अठसठि
तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ
परवानु ॥ जिसनो देवै दइआ
करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना
मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन
कुरबानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि
जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उ ारजना हरि

सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई
रामके करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा
नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी
वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि
सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद
अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न
दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल
दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते
रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक
चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित

सलाहीऐ जिसनो तिलु न तमाइ
॥१३॥ जिनि जिनि नामु धिआ-
इआ तिनके काज सरे ॥ हरि गुरु
पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे
॥ सरब सुखा निधि चरण हरि
भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति
तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि
भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन
अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस
मूरत भले जिन कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा
करहु हरे ॥ १४ ॥ १ ॥

बसंत की वार महलु ५ ॥

ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित

नवा निरोआ ॥ दितु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिसते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम कें कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५

जा कै वसि खान सुलतान ।। जा कै वसि है सगल जहान ।। जा का कीया सभु किछु होइ ।। तिस ते बाहरि नाही कोइ ।। १ ।। कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ।। काज तुमारे देइ निबाहि ।।१।। रहाउ ।। सब ते ऊच जा का दरबारु ।। सगल भगत जा का नामु अधारु।। सरब बिआपति पूरन धंनी ।। जा की सोभा घटि घटि बनी ।।२।। जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ।। जिसु सिमरत जमु किछु न कहै ।। जिसु सिमरत होतु सूके हरे ।। जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ।। ३ ।। संत सभा कउ सदा जैकारु ।। हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ।। कहु नानक मेरी सुणी अरदासि।।संत प्रसादिमोकउ नाम निवासि ।। ४ ।। २१ ।। ९० ।।

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कीरतनी

❀ आसा दी वार ❀

(रागु सोरठि कबीर जी घरु २)

दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रंगु लाई ॥ अब बेगल कहनु न जाई ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राभ नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई ॥ सभ खलक तमासे आई ॥ बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ अपने रंग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई ॥ सब

कथि कथि रही लुकाई ॥ जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ता के हिरदै रहिआ समाई ॥३॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ कहि कबीर रंगि राता ॥ मिलिओ जग जीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आसा महला ४ ॥

छंत घरु ४ ॥

हरि अमृत भिने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिना ॥ जनु नानकु मसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥ १ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे असराजै की धुनी ॥

सलोकु म० १ ॥

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ १ ॥ महला २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि

हजार ॥ एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥ म० १॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥

पउड़ी ॥

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि

तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥

गोंड महला ४ ॥

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहुतपतै जिउ तृखावंतु बिनु नीर ॥ १ ॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर॥१॥रहाउ॥ मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सोभाई सोमेरा बीर॥२॥मिलु मिलुसखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥४॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणी-आले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी

पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ॥जीवन मुकति सो आखीऐ मंरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुर मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥

सलोकु म० १ ॥

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥

सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो
मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥

म० १ ॥

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥
नानक कार न कथनी जाइ ॥
कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥

महला २ ॥

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए ईकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइग्रा विचि निवासु ॥ एव भि ग्राखि न जापई जे किसै ग्राणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ ग्रापि करे परगासु ॥ ३ ॥

पउड़ी

नानक जीग्र उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिग्रा ॥ ग्रोथे

सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥

सोरठि महला ५ ॥

हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥१॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंड दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुन नही

कोई तुम दानु देह मिहरवाना ॥२॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥ ३ ॥

सलोक म० १ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥

विसमादु रूप विसमादु रंग ॥
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु
॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह
॥ विसमादु उभड़ विसमादु
राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु
दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा
हजूरे ॥ वेखि विडाणु रहिआ

विसमादु ॥ नानक बूझणु पूरै भागि ॥१॥ म० १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबां कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरतीखाकु

॥ सभ तेरी कुद्रति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताकोताकु ॥२॥पउड़ी ॥ आपीन्है भोगभोगिकै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइया ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइया ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सन्तह बिनंती ठाकुर मेरे जीआ जंत तेरे

धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥ १ ॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिर पाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥

दीन दइआल सुनि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइग्रा ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइग्रा ॥ ४ ॥

सलोक म० १ ॥

भै विचि पवणु वहै सद वाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीग्राउ ॥
भै विचि ग्रगनि कढै वेगारि ॥

मै विचि धरती दबी भारि ॥
मै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
मै विचि राजा धरम दुआरु ॥
मै विचि सूरजु मै विचि चंदु ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥
मै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥
मै विचि आडाणे आकास ॥
मै विचि जोध महाबल सूर ॥
मै विचि आवहि जावहि पूर ॥
सगलिआ भउलिखिआ सिरिलेखु॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु
॥ १ ॥ म० १ ॥ नानक निरभउ
निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥

केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद
बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि
मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार
महि आइ कढहि बाजार ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि
आल पताल ॥ लख टकिआ के
मुंदड़े लख टकिआ के हार
जितु तनि पाईअहि नानका से
तन होवहि छार ॥ गिआनु न
गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु
॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर
हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी

ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ
ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही
सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ ॥
जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥

बिलावलु महला ५ ॥

मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिच तनी ॥१॥ दिन सु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी॥२॥ बलि बलि जाउ सिआम सुंदर

कउ अकथ कथा जाकी बात सुनी ॥३॥
जन नानक दासनि दासु कहीअत है
मोहि करहु कृपा ठाकुर अपुनी ॥ ४ ॥

आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु
लधा राम राजे॥कंचन काइआ कोट गड़
विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा
रतनु है मेरा मनु तनु विधा॥ धुरि भाग
वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥

**सलोक म० १॥घड़ीआसभे गोपीआ
पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु
पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार
॥ सगली धरती मालु धनु
वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक
मुसै ज्ञान विहूणी खाइ**

गइआ जमकालु ॥ १ ॥ म० १ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
गावनि सीता राजे राम ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥

सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ
किरति नचै सभु कोइ॥ नचि नचि
हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न
जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु
मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि

भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥ पउड़ी॥
नाउ तेरा निरंकारु है नाइ
लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ
पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि
गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा
आपणा करि पुंनहु नीचु
सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै
जरु वेस करेदी आईऐ ॥
को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

कवन गुन प्रान पति मिलउ मेरी
माई ॥ १ ॥ रहाउ॥ रूप हीन बुधि बल
हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई॥ १ ॥
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि

अनाथ की करह समाई ॥ २ ॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ११८ ॥

पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥

सलोक म० १ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही

सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ

लोग्रा ग्राकारा ग्राकार ॥ ग्रोइ जि ग्राखहि सु तूं है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु ग्राधारु ॥ सदा ग्रनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिग्रा पाछारु ॥ ॥ १ ॥ म० १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्ग्रिहार ॥ घड़ि भांडे इटा कीग्रा जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़िझड़ि पवहि ग्रंगिग्रार ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीग्रा सो जाणै करतारु ॥ २ ॥

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु
करि परगटु आखि सुणाइआ ॥
सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है
जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे
सिउ चितु लाइआ ॥ जग जीवनु
दाता पाइआ ॥ ६ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ ॥ घरु २॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु
पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई॥१॥
दरसनु हरि देखण कै ताई॥ कृपा करहि

ता सतिगुरु मेलहि हरि हरिनामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ जे भुख देहि त इतही राजा दुख विचिसूख मनाई ॥३॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगना आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥ ३ ॥

सलोक म० १॥ हउ विचि आइआ

हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि
जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ
विचि दिता हउ विचि लइआ ॥
हउ विचि खटिआ हउ विचि
गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु
कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप
पुंन वीचारु ॥ हउ विचि
नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ
विचि हसै हउ विचि रोवै ॥
हउ विचि भरीऐ हउ विचि
धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी
खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ
विचि सिआणा ॥ मोख मुकति

की सार न जाणा ॥ हउ विचि
माइग्रा हउ विचि छाइग्रा ॥ हउमै
करि करि जंत उपाइग्रा ॥
हउमै बूझै त दरु सूझै ॥
गिग्रान विहूणा कथि कथि लूझै ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥
महला २ ॥ हउमै एहा जाति है
हउमै करम कमाहि ॥ हउमै
एई बंधना फिरि फिरि जोनी
पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै
कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ

किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुरका सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखींई जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तू बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥

गउड़ी की वार महला ५ ॥ पउड़ी ॥

अंमृतु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥ ३ ॥

गुर अंमृत भिनी देहुरी अंमृतु बुरके राम राजे॥जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंमृति छकि छके॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥

सलोक म० १ ॥

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोग्रां मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ ग्रंडज जेरज उतभुजां

खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताइ ॥ नानक जंत उपाइकै समाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ म० १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख

सचु न जाणन्ही मन मुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥

रामकली की वार महला ५ ॥

सलोक मः ५ ॥

जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥

आसा महला ४ ॥

हरि अंमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धंनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे॥ जन नानक गुरु तिन्ही पाइआ

जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे॥ १॥

सलोकु म० १ ॥

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥ म० १॥लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ॥तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ॥देही दुखु दीआ ॥

सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
बसत्र न पहिरै॥ अहिनिसि कहरै ॥
मोनि विगूता किउ जागै गुर
बिनु सूता ॥ पगउपेताणा
अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु
मलु खाई सिरि छाई पाई ॥
मूरखि अंधै पति गवाई ॥
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥

हरि का नामु मंनि वसाए ॥
नानक नदरि करे सो पाए ॥
ग्रास ग्रंदेसे ते निहकेवलु
हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे ॥
दरि सोहनि कीरति गावदे ॥
नानक करमा बाहरे दरि ढोग्र
न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु
न बुझन्हि ग्रापणा ग्रणहोदा
ग्रापु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का
नीच जाति होरि उतम जाति
सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै
धिग्राइदे ॥ १ ॥

धनासरी महला ५ ॥

तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुमही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किनही लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुमही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥

सचु साह हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ

हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा॥२॥

सलोकु म० १ ॥

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपुअपारु॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिओकूड़ु डोबेपूरु॥नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु

१॥ म० १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि के विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥

सतिगुरू नो पुछिकै बहि रहै करे निवासु॥ सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबिलिखिआ ता धूड़ितिन्हा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥

सूही महला ५ ॥

किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि

निरगुन के दातारे॥बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥ १ ॥ लाल रंगीले प्रीतम मन मोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ २ ॥ किआ सेव कमावउ किआकहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥ ३ ॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥ ४ ॥ ६ ॥

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनराति एहा आस आधारो॥

हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥

सलोकु म० १ ॥

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ

सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ
बहिबहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति
गिआन विहूणी भाहि भरे मुर-
दारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि
रूप करेहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि
वादा गावहि जोधा का बीचारु ॥
मूरख पंडित हिकमति हुजति
संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु
करहि गावावहि मंगहि मोखदुआरु
॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि
छडिबहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा
आपे होवै घटि न कोई आखै॥पति
परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक

तोलिआ जापै ॥ २ ॥ म० १ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै
सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ
करता करे सु होई ॥ अगै जाति
न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
जिनकी लेखै पति पवै चंगे सेई
केइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु
जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी
खसमु धिआइआ ॥ एना जंता
कै वसि किछु नाही तुधु वेकी
जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं
मेलि लैहि इकि आपहु तुधु
खुआइआ॥गुर किरपा ते जाणिआ

जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥

कलिआन महला ४ ॥

प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥ जो हरि स्वामी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोतीजोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ कृपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि

दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥४॥६॥

जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे॥हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥

सलोकु म० १ ॥

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ॥तेराअंतु न जाई लखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाति महि

जोति जोति महि जाता अकल
कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा
साहिबु सिफति सुआलिहउ जिनि
कीती सो पारि पइआ ॥ कहु
नानक करते कीआ बाता जो किछु
करणासुकरि रहिआ॥२॥म० २ ॥
जोग सबदं गिआन सबदं बेद
सबदं ब्रहमणाह ॥ खत्री सबदं
सूर सबदं सूद्र सबदं प्राकृतह ॥
सरब सबदं एक सबदं जेको जाणै
भेउ ॥ नानकु ताका दासु है सोई
निरंजन देउ ॥३॥ म० २ ॥ एक
कसनं सरब देवा देव देवात

आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ताका दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ४ ॥ म० १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥ पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अते ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि

चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

सूही महला ५ ॥

भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुहहु महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ २ ॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥३॥ पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥४॥७॥५४॥

आसा महला ४ ॥

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ॥जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥

सलोकु म० १ ॥

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि

रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ म० १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महिआछै साचि रहे॥सभुको सचिसमावै ॥रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउमोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रा-वलि कान्ह कृसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ

नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे
तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥
चारे वेद होए सचिआर ॥
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ
जितु मिलिऐ खसमु समालिआ
॥ जिनि करि उपदेसु
गिआन अंजनु दीआ इन्ही
नेत्री जगतु निहालिआ ॥
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से

वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा बिरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥

तिलंग महला ९ काफी ॥

चेतना है तउ चेत लै निसिदिनि मै प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगुन काहि न गावही मूरखअगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥

जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ

अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥

सलोक म० १ ॥

सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता

मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ
थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥
म० १॥पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि
झूठ बिभूखणसारं ॥ त्रैपाल तिहाल
बिचारं ॥ गलि माला तिलकु
लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि
फोकट निसचउ करमं ॥ कहु
नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु
सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ पउड़ी ॥
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ
अंदरि जावणा॥ मंदा चंगा आपणा

आपे ही कीता पावणा॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥

बिलावलु महला ५ ॥

पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले तृभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥१॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥ सिंघु बिलाई होइ गइओ तृणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते

दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता॥
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक
दरस रीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए
राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु
नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं
मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि
मनि भाए॥जन नानक सतिगुरु भेटिआ
हरि नामि तराए ॥ ३ ॥

सलोकु म० १ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु
गंढी सतु वटु ॥ इहु जनेऊ जीअ
का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु
तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न

जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ म० १॥लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिन्ह खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि

पाईए होरु ॥ नानक तगु न
तुटई जेतगि होवै जोरु॥२॥ म० १॥
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही
सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ
तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ म० १ ॥
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥
तगु न पैरी तगु न हथी ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे
अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे
वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥
सुणि वेखहु लोका इहु विडाणु ॥

मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥
पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु
किरपा करे ता साई कार कराइसी
॥ सो सेवकु सेवा करे जिसनो
हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ
होवै परवाणु ता खसमै का महलु
पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे
मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥

(सारंग की वार) महला १ ॥

न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै
सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी
कीतै रोजि॥ न भीजै रूपी मालंी रंगि॥

न भीजैतीरथिभविऐ नंगे॥न भीजै दातीं कीतै पुंनि॥न भीजैबाहरि बैठिआ सुंनि ॥न भीजै भेड़ि मरहिभिड़ि सूर॥न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥२॥

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥

सलोक मः १ ॥

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जप माली धानु

मलेछां खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडी ले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥ म० १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलिताग॥ तिन घरि ब्राहमण पूरहि नाद॥उन्हा भि आवहि ओई साद॥कूड़ीरासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तोड़ि धोती कखाई ॥हथि छुरी जगत कासाई ॥ नीलवसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥

मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा
॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥
देकै चउका कढी कार ॥ उपरि
आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु
भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु
असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़
करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि
॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु
को वेखि नदरी हेठि
चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ

आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ १६ ॥

गउड़ी की वार म: ५ ॥ पउड़ी २१ ॥

मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ प्रीति लगी हरिनामु सिउ ए हसती घोड़े॥राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ नानक मनि तनि चाउ एहु नितप्रभ कउ लोड़े॥२१॥

आसा महला ४ ॥

जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे

बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥ १ ॥

सलोकु म० १ ॥

जे मुहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ जिउ जोरू सिर नावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै

नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे
एहि न आखीअहि बहनि जि
पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका
जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण
वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥
कोठे मंडप माड़ीआ लाइ
बैठे करि पासारिआ ॥ चीज
करनि मनि भावदे हरि बुझनि
नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि
खाइआ वेखि महलति मरणु
विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि
हारिआ ॥ १७ ॥

सूही महला ५ ॥

अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ १ ॥

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुर सिखी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन्ह हरिनामु धिआवा ॥ जिन नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २ ॥

सलोकु म० १ ॥

जेकरि सूतकु मंनीऐ सभतै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआबाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥मनकासूतकुलोभु हैजिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ परधन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥

नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि
जाहि ॥२॥ म० १ ॥सभोसूतकुभरमु
है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा
हुकमु हैभाणै आवैजाइ॥खाणापीणा
पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥
नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ
तिन्हासूतकु नाहि॥३॥ पउड़ी॥सति
गुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु
विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि
मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु
भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि
हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु
मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि

तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥

राग सूही असटपदीआ म० ४ विचों
झखड़ झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण
जाई ॥ १३ ॥ समुंदु सागरु होवै बहु
खारा गुरु सिखु लंघि गुर पहि जाई ॥
१४ ॥ जिउ प्राणी जल बिनु है मरता
तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ १५ ॥
जिउ धरती सोभ करै जलु बरसै तिउ
सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥१६॥ सेवक
का होइ सेवक वरता करि करि बिनउ
बुलाई ॥ १७ ॥ नानक की बेनंती हरि
पहि गुर मिलि गुरसुखु पाई ॥ १८ ॥

गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम
हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा
सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी॥गुरसिखा
की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ
घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंन बीजिआ

फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥३॥

सलोकु मः १ ॥

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइकै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि

बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक ऐवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥ म० १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलैराहु॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडुऊपजै भंडै बाझु न कोइ॥नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥ ११ ॥

गउड़ी महला ५ ॥

प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि

कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९॥

गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे॥कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ सलोकु॥

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह

सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै
सजाइ ॥१॥ म० १ ॥ अंदरहु झूठे
पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु
॥ अठसठि तीरथ जे नावहि
उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु
अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले
संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब
सेती देखन्हे वीचारि ॥ रंगि हसहि
रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु
सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु
मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु

एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल ॥ आपे ही तै धारीऐ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिसके जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥

सोरठि महला ५ ॥

कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दातारे॥ प्रतिपालै नित सारि

समालै इकु गुनु नही सूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरू करता रे॥हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

आसा महला ४ ॥

जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरिनामु द्रिड़ावै राम राजे ॥

तिसकी तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सदही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोई ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ

थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ
सो साहिबु सदा समालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा
घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा
मूलि न कीचई दे लंमी नदरि
निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि
न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

आसा महला ५ ॥

अपुने सेवक की आपे राखै आपे
नामु जपावै॥जह जह काजकिरति सेवक
की तहा तहा उठि धावै ॥१॥सेवक कउ
निकटी होइ दिखावै॥जो जो कहै ठाकर

पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

जिन्नी गुरमुखि नामु धिआइआ तिन्हा फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुर पुरखु मनाइआ तिन्ह पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥

सलोकु महला २ ॥

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाए सेवा

करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिसनो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ महला १ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै अंमृतु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि॥जेहा जाणै तेहो करतै वेखहु को निरजासि॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥

महला २ ॥ नालि इआणे दोसती
वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि
लीक जिउ तिसदा थाउ न थेहु ॥
४ ॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे
कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक
अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥
५ ॥ पउड़ी ॥ चाकुरु लगै चाकरी
जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति
तिसनो अगली ओहुवजहु भि दूणा
खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि
गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए
अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥
जिसदा दिता खावणा तिसु

कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥

गउड़ी कबीर जी ॥

निंदउ निंदउ मोकउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदा होइ ता बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥ १ ॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥ ३ ॥

जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह

हरि राखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा॥ जन नानक नामु थिआइआ हर रखणहारा ॥ ३ ॥

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ताके पारावार ॥

आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि विसीआर॥आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥

राग सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिसदी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि

भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनो सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नाम देउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ।४।१३।२०।

सलोकु म० १ ॥

आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥

महला २ ॥ आपे साजे करे
आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु
विचि जंत उपाइकै देखै थापि
उथापि ॥ किसनो कहीऐ नानका
सभु किछु आपे आपि ॥२॥पउड़ी॥
वडे कीआ वडिआईआ किछु
कहणा कहणु न जाइ ॥ सो
करता कादर करीमु दे जीआ
रिजकु संबाहि ॥ साई कार
कमावणी धुरि छोडी तिनै पाइ ॥
नानक एकी बाहरी होर दूजी
नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै
रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु ॥

❀ आरती ❀

धनासरी महला १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वाहे गुरु

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मल आनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद

बिमल नन एक पद् गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुरसाखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ १ ॥

धनासरी रविदास जीउ ॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठा-

रह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ
तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा
तुही चवर ढोलारे ॥३॥ दस अठा
अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि
है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु
नामु तेरो आरती सतिनामु है
हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

धनासरी श्री सैणु जी ॥

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमलापाती ॥ १ ॥
मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु
राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥

तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥ २ ॥
रामा भगति रामानंदु जानै ॥
पूरन परमानंदु बखानै ॥ ३ ॥
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥

प्रभाती कबीर जीउ ॥

सुंन संधिआ तेरी देव देवाकर
अधपति आदि समाई ॥ सिध
समाधि अंतु नही पाइआ लागि
रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती
हो पुरख निरंजनु सतिगुर पूजहु
भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै
अलखु न लखिआ जाई॥ १॥रहाउ

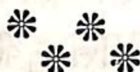
॥ ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥ २ ॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंग पानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीन्ही निरंकार निरबानी ॥३॥५॥ स्वैया ॥ याते प्रसंनि भए है महांमुनि देवन के तप मै सुख पावैं ॥ जग करै इक बेद ररै भव ताप हरै मिलि धियानहि लावैं ॥ झालर ताल मृदंग उपंग रबाब लीए सुर साज मिलावै ॥ किंनर गंधव गान करै गनि जच्छअपच्छर

निरत दिखावैं॥५४॥संखनकी धुनि घंटनि की करि फूलन की बरखा बरखावैं॥ आरती कोट करै सुर सुंदर पेख पुरंदर के बलि जावैं॥ दानत दच्छन दै कै प्रदच्छन भाल मै कुंकम अच्छत लावैं॥ होत कुलाहल देव पुरी मिलि देवन के कुलि मंगलि गावै॥५५॥हेरविहे ससिहे करुणा निध मेरी अबै बिनती सुन लीजै॥ और न मांगत हउ तुम ते कछु चाहत हों चित मै सोई कीजै॥ शसत्रन सों अति ही रण भीतर जूझ मरों तऊ

साच पतीजै ॥ संत सहाइ सदा जग माइ कृपा कर स्याम इहै बर दीजै।५६।स्वैया ॥ पाइ गहे जब ते तुमरे तबते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिमृति सासत्र बेद सबै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥ श्री असपान कृपा तुमरी करिमै न कहयो सब्रतोहि बखान्यो ॥ दोहरा॥ सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास

तुहार ॥ ऐसे चंड प्रताप ते देवन बडिओ प्रताप ॥ तीन लोक जै जै करै ररै नाम सति जापि ॥

चतर चक्रवरती चतरचक्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी दइआलं सरूपे ॥ सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥ १११ ॥



सुखमनी साहिब

गउड़ी सुखमनी म: ५ ॥

सलोकु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ असटपदी॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनंत अनेकै ॥ बेद पुरान सिम्रति सुधाखर ॥ कीने रामनाम इक आखर ॥ किनका एक जिसु

जीअ बसावै ॥ ताकी महिमा गनी
न आवै॥कांखी एकै दरस तुहारो ॥
नानक उनसंगि मोहि उधारो॥१॥
सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम॥रहाउ॥
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ
कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ
सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥प्रभकै
सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै
सिमरनि भउ न बिआपै॥प्रभकैसिम-
रनि दुखु न संतापै॥प्रभ का सिमरनु

साधकै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि॥२॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउनिधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जपतपपूजा॥प्रभकैसिमरनि बिनसै दूजा॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥प्रभकै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ताकै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिम-

रनि तृसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥ ४ ॥
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥

प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥
सिमरन ते लागेजिनआपिदइआला
॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥
प्रभ कउसिमरहि तिनसदबलिहारी॥
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥
प्रभकउ सिमरहितिन सूखि बिहावै॥
प्रभकउ सिमरहि तिनआतमु जीता॥
प्रभ कउसिमरहि तिननिरमलरीता॥
प्रभ कउसिमरहि तिन अनद घनेरे॥
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥ ६ ॥
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ॥
नानक तिन जन सरनी पइआ॥७॥
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥

हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
हरि सिमरनि नीच चहुकुंट जाते ॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥
हरि सिमरनि कीओसगल अकारा॥
हरि सिमरनि महि आपिनिरंकारा॥
करि कृपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि
पाइआ ॥८॥१॥ सलोकु ॥
दीन दरद दुख भंजना
घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि
तुमारी आइओ नानक के प्रभ

साथ ॥१॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनह चरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मनमेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥ हरिका नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधु न

परै ॥ हरिका नामु जपत निसतरै ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह
हरि नामु संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ
नानक गुरमुखि परमगतिपाईऐ॥२॥
छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥
नामु जपत पावै बिस्राम ॥

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥
जिह मारग के गने जाहि न कोसा॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम॥
जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥ तह

नानक हरि हरि अंमृतु बरखै ॥४॥
भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत
जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का
नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि
उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत
संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु
साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि
नामु निधानु॥ पारब्रहमि जन कीनो
दान ॥ मन तन रंगि रते रंग एकै॥
नानक जनकैबिरति बिबेकै॥५॥हरि
का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
हरिकै नामि जनकउ तृपति भुगति॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥

हरि नामु जपत कछु परै न भंगु ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
हरि का नामु जन कउ भोगु जोग॥
हरिनामु जपत कछुनाहि बिओगु ॥
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरिधनु जनकउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥

आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥
पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥

नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥ सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिम्रती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥

असटपदी ॥

जापताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिम्रति वखिआन ॥
जोगअभिआस करम ध्रम किरिआ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही
तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक
गुरमुखि नामु जपीऐ इकबार ॥१॥
नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि
के नाम समसरि कछु नाहि॥नानक
गुरमुखि नामु जपत गति पाहि॥२॥

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधनाकरै॥मनते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानकनामि उधरे पतित बहुमूच॥२॥ बहुतु सिआणप जमकाभउ बिआपै॥ अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

छूटसि नाही ऊभ पइग्रालि ॥ मोहि बिग्रापहि माइग्रा जालि ॥ ग्रवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को ग्रापुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को ग्रपुनी सोभा लोरै ॥ साध संगि इह हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥

साध जना की सरनी परै ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा॥
नानक ताकै बलि बलि जासा ॥५॥
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साध संगि जाका मिटै अभिमानु ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
जा का मन होइ सगल की रीना ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि
चीना ॥मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल सृसटि साजना ॥
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावन हार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुमरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥

साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरिका नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अंमृत बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम
थानु ॥ नानक जिह घटि वसै
हरि नामु ॥ ८ ॥ ३ ॥

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो
प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ
तिसु चीति रखु नानक निबही
नालि ॥ १ ॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगन महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत

बनिता संगि हसहि ॥ जिह प्रसादि
पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई
पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि
भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री
संगि साथि बसा ॥ दीने हसत
पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि
तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे
दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक
काढि लेहु प्रभ आपे ॥ २ ॥ आदि
अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ
प्रीति न करै गवारु ॥ जाकी सेवा
नवनिधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु
नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा

हजूरे ॥ ताकउ अंधा जानत दूरे ॥
जाकी टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक
राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥ रतनु
तिआगि कउडी संगि रचै ॥ साचु
छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना
सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु
सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस
का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु
परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥

नानक काढि लेहु प्रभ दइआल॥४॥
करतूति पसू की मानस जाति॥
लोक पचारा करै दिनु राति॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह॥
जाकै अंतरि बसै प्रभु आपि॥
नानक ते जन सहजि समाति॥५॥
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै॥

कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसन पद गावै गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥ संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ दृडु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े

चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध
मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ
ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने
कैई जनम ॥ नानक राखि लेहु
आपन करि करम ॥७॥ तू ठाकुरु
तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिंडु
सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता
हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि
सूख घनेरे ॥ कोइ न जानै तुमरा
अंतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
तुमरी गति मिति तुमही जानी ॥

नानक दास सदा कुरबानी ॥
८ ॥ ४ ॥

सलोकु ॥

देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि
आन सुआइ ॥ नानक कहू न
सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक
बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि
लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥

जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
सरब थोकनानक तिनि पाइआ॥१॥
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु
लेइ॥अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
बहुरि उसका बिस्वासु न होवै ॥
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥

नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥
अनिक भाति माइआ के हेत ॥
सरपर होवत जानु अनेत ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि
रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ
सिउजो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि
न आवै केह ॥ मन हरि के नाम
की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा
नानक आपि लए लाई ॥ ३ ॥
मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ
॥ मिथिआ हउमै ममता मइआ ॥

मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद ॥

मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु

बृथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के
निरारथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन
जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
नानक ताकै बलि बलि जाउ ॥६॥
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ
लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥
अवर उपदेसै आपि न करै ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥

नानक उन जन चरन पराता ॥७॥
करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥
अपना कीआ आपहि मानै ॥
आपहि आप आपि करत निबेरा ॥
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत
नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते
रहत ॥ सभु कछु जानै आतम
की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए
लड़िलाइ ॥ थान थनंतरि रहिआ
समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा
करी ॥ निमख निमख जपि नानक
हरी ॥ ८ ॥ ५ ॥

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छती अंम्रत खाहि ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥
तिस कउ सिमरत परमगति पावहि॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुखबसना॥

आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
नानक सदा धिआईऐ धिआवन
जोग ॥ १ ॥ जिह प्रसादि पाट
पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि
कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि
सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर
ता का जसु गावीजै ॥ जिह प्रसादि
तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को
जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि
तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा
धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी
जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक

पति सेती घरि जावहि ॥ २ ॥
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मनसुखु पावहि हरिहरि जसुकहत॥
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ताकै ॥
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे॥
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥
नानक ताकी भगति करेह ॥ ३ ॥
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु

कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिसका धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी॥

जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥ ५ ॥
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥

जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥ ६ ॥ जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ताकउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै

जपु सोइ ॥ ७ ॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछु न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इनकै कछू न हाथ ॥८॥६॥

सलोकु ॥

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥

जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥१॥
असटपदी ॥
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साध संगि मलु सगली खोत ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साध कै संगि प्रगटै सु गिआनु ॥
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साध संगि सभु होत निबेरा ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी॥

नानक साध की सोभा प्रभ माहि
समानी ॥१॥ साध कै संगि अगोचरु
मिलै॥ साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साध संगि अमृत रसु भुंचा ॥
साध संगि होइ सभ की रेन ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साध संगि असथिति मनु पावै ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साध संगि नानक प्रभ सुप्रसंन॥२॥
साध संगि दुसमन सभि मीत ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥

साध संगि किस सिउ नही बैरु
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साध संगि जाने परमानंदा ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥
आपे जानै साध बडाई ॥ नानक
साध प्रभू बनिआई ॥ २ ॥
साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साध संगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥

साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
नानक साधू कै कुरबान ॥ ४ ॥
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साध संगि साजन मीत कुटंब
निसतारै ॥ साधू कै संगि सो धनु
पावै॥जिसु धन ते सभु को वरसावै॥
साध संगि धरमराइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुर देवा ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साध संगि अम्रित गुन गाइन ॥

साध कै संगि सब थान गंमि ॥
नानक साध कै संगि सफल जनंम
॥५॥साध कै संगि नही कछु घाल॥
दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साध संगि बिछुरत हरि मेला ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक
उधरै साध सुनि रसै ॥ ६ ॥
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥

साध संगि हरि के गुन गाउ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साध संगि सरपर निसतरै ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साध संगि भए आगिआकारी ॥
साध संगि गति भई हमारी ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥
साध की महिमा बेद न जानहि ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥

साध की सोभा का नाही अंत ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साध की सोभा साध बनिआई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई
॥ ८ ॥ ७ ॥

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण
ब्रहम गिआनी होइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

ब्रहम गिम्रानी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिम्रानी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिम्रानी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिम्रानी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिम्रानी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥ ब्रहम गिम्रानी निरमल ते निरमला ॥

जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान॥
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥
ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपर मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु

बुरा न भइआ ॥ ब्रहम गिआनी
सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी
की द्रसटि अंम्रितु बरसी ॥ ब्रहम
गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम
गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम
धिआनु ॥ ३ ॥ ब्रहम गिआनी
एक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी
का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी
कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी
परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी
कै नाही धंधा ॥ ब्रहम गिआनी

ले धावतु बंधा ॥ ब्रहम गिआनी
कै होइ सु भला ॥ ब्रहम गिआनी
सुफल फला ॥ ब्रहम गिआनी
संगि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहम
गिआनी जपै सगल संसारु ॥ ४ ॥
ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥

ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी एक संगि हेता॥ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि॥ ब्रहम गिआनी का बड प्रताप॥ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ॥ ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजह महेसुर॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥ ब्रहम गिआनी की कीमति

नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥ ब्रहम गिआनी सभ सृसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद

जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिम्रानी
मुकति जुगति जीम्र का दाता ॥
ब्रहम गिम्रानीपूरन पुरखु बिधाता॥
ब्रहम गिम्रानी म्रनाथ का नाथु ॥
ब्रहम गिम्रानी का सभ ऊपरिहाथु॥
ब्रहम गिम्रानी का सगल म्रकारु ॥
ब्रहम गिम्रानी म्रापि निरंकारु ॥
ब्रहम गिम्रानी की सोभा ब्रहम
गिम्रानी बनी ॥ नानक ब्रहम
गिम्रानी सरब का धनी ॥८॥८॥

सलोकु ॥

उरिधारै जो म्रंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु
सगल निसतारै ॥ १ ॥

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
साध की टहल संत संगि हेत ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
मन की बासना मन ते टरै ॥

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस
॥ १ ॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि
सुप्रसंन ॥ बिसन की माइआ ते
होइ भिंन ॥ करम करत होवै
निहकरम॥ तिसु बैसनो का निरमल
धरम ॥ काहू फल की इछा नही
बाछै ॥ केवल भगति कीरतन संगि
राचै ॥ मन तन अंतर सिमरन
गोपाल॥सबऊपरि होवत किरपाल॥
आपि दृड़ै अवरह नामु जपावै ॥
नानक ओहु बैसनो परमगति पावै॥
॥२॥ भगउती भगवंत भगति का

रंगु ॥सगल तिआगै दुसट का संगु॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
साध संगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक
ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु
पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥

हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक
उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥ ४ ॥
बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥
जो जो जपै तिसकी गति होइ ॥
साध संगि पावै जनु कोइ ॥
करि किरपा अंतरि उरधारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥

कलिश्राणा रूप मंगल गुणगाम ॥
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिश्रा
धुरि करमि ॥ ५ ॥ जिस कै मनि
पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का
नामु सति रामदासु ॥ श्रातमरामु
तिसु नदरी श्राइश्रा ॥ दास दसंतण
भाइ तिनि पाइश्रा ॥ सदा निकटि
निकटि हरि जानु ॥सो दासु दरगह
परवानु ॥ श्रपुने दास कउ श्रापि
किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ
सोभी परै ॥ सगल संगि श्रातम
उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक

रामदासु ॥ ६ ॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अंम्रतु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥ ७ ॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ

भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥ ८ ॥ ९ ॥

सलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥ १ ॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि

किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहिं ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥

कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥ २ ॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरीमेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥

कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक
आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि॥४॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि॥
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
जंह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥

५॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम
नाम संगि तिनि लिवलागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई
कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि
होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो

बिसथार ॥ कई बार पसरिओ
पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे
आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
कई कोटि तत के बेते ॥ सदा
निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि
नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए
सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि
नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि

सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥ ८ ॥ १० ॥

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥
१ ॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
प्रभ भावै ता हरिगुण भाखै ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो
भावै सो कार करावै ॥ नानक
द्रिसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस
कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥
भरमे भूला दहदिसि धावै ॥ निमख
माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति

देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ
॥ ३ ॥ खिन महि नीच कीट कउ
राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥
जा का द्रसटि कछू न आवै ॥
तिसु ततकाल दहदिस प्रगटावै ॥
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥
अपनी बणत आपि बनाई ॥
नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥
इस का बलु नाही इसु हाथ ॥
करन करावन सरब को नाथ ॥

आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
नानक आपि मिलावणहार ॥ ५ ॥
कबहू निरति करै बहु भाति ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥
कबहू सरब की होत रवाल ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥

कबहू भेखारी नीच का राजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥ कबहू होइ पंडतु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनि धारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइजीआ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक
दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ कबहू साध
संगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते
बहुरि न आवै॥अंतरि होइ गिआन
परगासु ॥ उसु असथान का नही
बिनासु॥मनतन नामि रते इक रंगि॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान ।८।११।
सलोकु ॥
सुखी बसै मसकीनीआ

आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ
नानक गरबि गले ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जिसकै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरक पाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मै जोबन वंतु ॥ सो
होवत बिसटा का जंतु ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
करि किरपा जिसकै हिरदै गरीबी

बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १ ॥ धनवंता होइ करि गरबावै ॥ तृण समानि कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ धरमराइ तिसु करे खुआरी ॥ गुरप्रसादि जाका मिटै अभिमानु ॥ सोजनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥

स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ॥३॥
जब लगु जानै मुझ ते कछु
होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही
कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु
करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि

फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी
मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही
चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि
माइ ॥ तब लगु धरमराइ देइ
सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥
गुरप्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
तृपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥ सदा
सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥
करन करावन करनैहारु ॥ इस कै
हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी द्रसटि
करे तैसा होइ ॥ आपे आपि आपि
प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु
अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू
कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सदही रहिआ समाइ ॥६॥
आपि उपदेसै समझै आपि ॥

आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उसका ओहु करनैहारु ॥
उसते भिन कहहु किछु होइ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग आपार ॥ मन
महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥

भला भला भला तेरा रूप ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥
निरमल निरमल निरमल तेरी
बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन
बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र
पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि
प्रीति ॥ ८ ॥ १२ ॥

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत कृपाल कृपा जे करै ॥ नानक
संत संगि निंदकु भी तरै ॥ १ ॥
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥
संत कै दूखनि तृगद जोनि किरमाइ॥
संतन कै दूखनि तृसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥
नानक संत भावै ता ओइ भी
गति पाहि ॥ २ ॥ संत का निंदकु
महा अतताई ॥ संत का निंदकु
खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का
निंदकु महा हतिआरा ॥ संत का
निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का

निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का
निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत
के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत
के निंदक कउ सदा बिजोग ॥
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥
नानक संत भावै ता उसका भी
होइ मोखु ॥ २ ॥ संत का दोखी
सदा अपवितु ॥ संत का दोखी
किसै का नही मितु ॥ संत के
दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के
दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत
का दोखी महा अहंकारी ॥ संत
का दोखी सदा बिकारी ॥ संत

का दोखी जनमै मरै ॥ संत की
दूखना सुख ते टरै ॥ संत के
दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक
संत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोखी कितै काजि न
पहूचै ॥ संत के दोखी कउ उदिआन
भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ि
पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते
थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक
की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़
किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही
खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु

न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लए उबारि ॥ ५ ॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥ संत का दोखी बिगड़ रूपु

होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न तृसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥ सभ घट तिसके ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥

तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
सभु कछु वरतै तिसका कीआ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥

सलोकु ॥

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
बहुरि न तृसना लागै आइ ॥
मारै राखै एको आपि ॥ मानुख
कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का
हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का
नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि
सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक
बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥
उसतति मन महि करि निरंकार ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥

निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साध संगि बिनसै सभ संगु ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥
२ ॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
से धनवंत गनी संसार ॥ मनि
तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥

सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत
की ओहु सोझी जानै ॥ नाम संगि
जिस का मनु मानिआ ॥ नानक
तिनहि निरंजनु जानिआ ॥ ३ ॥
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिस की जानहु तृसना बुझै ॥
साध संगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत॥
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
गृहसत महि सोई निरबानु ॥
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥

पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति
आवै॥सो संतु सुहेला नही डुलावै॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥
५ ॥ नह किछु जनमै नह किछु

मरै ॥ आपन चलितु आपही करै ॥
आवनु जावनु द्रिसटि अन द्रिसटि ॥
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि
आपे आपि सगल महि आपि ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि॥
अबिनासी नाही किछु खंड ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥
अलख अभेव पुरख परताप ॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसरान ॥

आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावै बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ

सुख निधान उनहू बनि आए ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥
८ ॥ १४ ॥

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ
बिरथा जाननहार ॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ
नानक तिसु बलिहार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब
जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की
चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते

बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे
सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु
आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू
न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥
१ ॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिसका दीआ दरबै॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु

देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु
गुरप्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक
सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥ जिउ
मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ
गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
प्राणी गुरचरण लगतु निसतरै ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
गुरदरसनु देखि मनिहोइ बिगासु ॥
जिउ महा उदिआन महि मारगु
पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति
प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ
धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि

॥३॥ मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर
तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो
कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला
काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु
आई तेरै संग ॥ लपटि रहिओ
रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि
हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती
घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ
लैनि तू आइआ ॥ रामनामु संतन
घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु
लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे

महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ इहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ताकै सद बलिहारै ॥ ५ ॥ चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥

हरिगुन गाइ अंमृत रसु चाखै ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥
६ ॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब
निधान जाकी द्रिसटी माहि ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु
किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ॥
नानक सोजनु निरमलु थीआ ॥७॥

जा कै मनि गुर की परतीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥ सचु
करणी सचु ता की रहत ॥ सचु
हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची
द्रिसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै
साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि
सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु
सचि समाता ॥ ८ ॥ १५ ॥

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंगु किछु
त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥

तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥ १ ॥

असटपदी ॥

अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥ कृपा निधान दइआल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥

जो करि पाइआ सोई होगु ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ताकै ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
॥ तप महि तपीसरु गृहसत महि
भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह
सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख
का किनै अंतु न पाइआ ॥ २ ॥
जा की लीला की मिति नाहि ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता
का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल

परोई अपुनै सूति ॥ सुमति
गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन
दास नामु धिआवहि सेइ ॥
तिहु गुण महि जाकउ भरमाए ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
ऊच नीच तिस के असथान ॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान॥३॥
नाना रूप नाना जा के रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ नाना
चलित करे खिन माहि ॥ पूरि
रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना

बिधिकरि बनत बनाई ॥ अपनी
कीमति आपे पाई ॥ सभ घट
तिस के सब तिस के ठाउ ॥ जपि
जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥
नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम
के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के
धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ नाम
के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि

लाए ॥ नानक चउथे पद महि
सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥ रूपु
सति जा का सति असथानु ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥
करतूति सति सति जाकी बाणी ॥
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥
सति करमु जा की रचना सति ॥
मूलु सति सति उतपति ॥ सति
करणी निरमल निरमली॥ जिसहि
बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति
नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिसवासु
सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥
सति बचन साधू उपदेस ॥ सति

ते जन जाकै रिदै प्रवेस ॥ सति
निरति बूझै जे कोइ ॥ नामु जपत
ता की गति होइ ॥ आपि सति
कीआ सभु सति ॥ आपे जानै
अपनी मिति गति ॥ जिस की
सृसटि सु करणै हारु ॥ अवर न
बूझि करत बीचारु ॥ करते की
मिति न जानै कीआ ॥ नानक
जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥
बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ
स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन
रहे ॥ गुरकै बचनि पदारथ लहे ॥

ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जाकै संगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि एक लिवलागी ॥ गुन गोबिंद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥

नामु सति सति धिआवनहार ॥
आपि सति सति सभ धारी ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछा-
निआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ
आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि
प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ
बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु

माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिंन न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नारायन मिले नानक एक ॥ २ ॥ ठाकुर का सेवकु आगिआ कारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि॥प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि॥सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै॥नानक

सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥
अपुने जन का परदा ढाकै ॥
अपने सेवक की सरपर राखै ॥
अपने दास कउ देइ वडाई ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
ताकी गति मिति कोइ न लाखै ॥
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो
प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक
सो सेवकु दहदिसि प्रगटाइआ ॥
४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥

जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि
नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥
बारंबार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी
अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥

नामो सुखु हरिनाम का संगु ॥
नाम रसि जो जन तृपताने ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु
नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ
अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की
महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का
गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ

पहर प्रभ बसहि हजूरे॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिनकी ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु॥ तिसु जनकी तूं सेवा लागु॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥नानक तिसुजनके पूजहु सद पैरा॥८॥१७॥

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ

सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक
हरि गुन गाउ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुरबचनी हरिनामु उचरै ॥ सतिगुरु
सिख के बंधन काटै ॥ गुर का
सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुर
सिखु कउ नाम धनु देइ ॥ गुर
का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु
सिख का हलतु पलतु सवारै ॥

नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥ गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥ २ ॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु

परमेसुर की गति जानै ॥ सो
सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पार-
ब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु
भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ
न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु
बडभागी पाईऐ ॥ ३ ॥ सफल
दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत
चरनगति निरमल रीति ॥ भेटत
संगि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की

दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम पतीआने॥पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र॥ अंमृत दृसटि पेखै होइ संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाई ॥ ४ ॥ जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी॥ अगम अगोचर प्रभ निर बानी॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥

चरन कमल हिरदै सिमरहि
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु
जपने ॥ ५ ॥ इहु हरि रसु पावै
जनु कोइ ॥ अंमृतु पीवै अमरु
सो होइ ॥ उसु पुरख का नाही कदे
बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुन-
तास ॥ आठ पहर हरि का नामु
लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ
देइ ॥ मोह माइआ कै संगि न
लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि
एकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥
नानक भरम मोह दुख तह ते

नासे ॥ ६ ॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिसका सा तिनि किरपा धारी ॥ साध संगि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥

अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ भए प्रगास साध कै संग ॥ रचि रचना अपनी कलधारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन
बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरिधारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ १ ॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥

जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
सो सुखु साधू संगि प्रीति ॥
जिसुसोभा कउ करहि भली करनी॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
सरब निधान महि हरि नामु
निधानु ॥ जपि नानक दरगहि
परवानु ॥ २ ॥ मनु परबोधहु हरि
कै नाइ ॥ दहदिसि धावत आवै
ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै
कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥

सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
आवागवनु मिटै प्रभ सेव ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
अनिक उपाव न छूटन हारे ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥

हरि की भगति करहु मन लाइ ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥
संगि न चालसि तेरै धना ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि
दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु
बिसारि नानक पछुताना ॥ ५ ॥
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥

भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
हरि की भगति करहु मनमीत
निरमल होइ तुमारो चीत ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
जनम जनम के किल बिख जाहि ॥
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ॥६॥
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥

छाडि सिश्रानप सगली मना ॥
साध संगि पावहि सचु धना ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब
निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक
जा कै मसतकि लेखु ॥ ७ ॥
एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥

एकु अराधि पराछत गए ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥
८ ॥ ११ ॥

सलोकु ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती
अपनी भगती लाइ ॥१॥

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरिनामु ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥

पारब्रह्म मेरी सरधा पूरि ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवहु ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
एक ओट एको आधारु ॥ नानकु
मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥ प्रभ
की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि
रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन
चाखिआ से जन त्रिपताने ॥ पूरन
पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे
प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध
कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ

तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु
लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ
प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु
होइ ॥ २ ॥ सेवक की मनसा
पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल
मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ
दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा
निहालु ॥ बंधन काटि मुकति
जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु
भ्रमु गइआ ॥ इछ पुनी सरधा
सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि
हजूरी ॥ जिसका सा तिनि लीआ
मिलाइ ॥ नानक भगती नामि

समाइ ॥३॥ सो किउ बिसरै जि
घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि
कीआ जानै ॥सो किउ बिसरै जिनि
सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै
जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै
जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि
को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै
जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम
का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु
इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना
नानक जन धिआइआ ॥ ४ ॥
साजन संत करहु इहु कामु ॥
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥

सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥
भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥
सरब कलिआण सूखनिधि नामु ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल
दूख का होवत नासु ॥ नानक
नामु जपहु गुन तासु ॥ ५ ॥
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥

बिरला कोऊ पावै संगु ॥ एक
बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर
प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ ताकी
उपमा कही न जाइ ॥ नानक
रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥ प्रभ
बखसंद दीन दइआल ॥ भगति
वछल सदा किरपाल॥ अनाथ नाथ
गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत
प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण कर-
तार॥ भगत जना के प्रान अधार ॥
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति
भाइ लावै मन हीत ॥ हम निर-
गुनीआर नीच अजान ॥ नानक

तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥
अनिक राज भोग बडिआई॥हरि के
नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु
भोजन कापर संगीत॥ रसना जपती
हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी
सोभा धनवंत॥ हिरदै बसे पूरन गुर
मंत ॥ साध संगि प्रभ देहु निवास ॥
सरब सूख नानक परगास॥८॥२०॥

सलोकु ॥

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन
समाधी आपि ॥ आपन कीआ

नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुंन तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुंन समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ जब इसका बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु होवत भरम॥आपन खेलु आपि वरतीजा॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब

बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तब नरक सुरगकहु कउन अउतार॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाए ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
जब आपहि आपिअपनी जोतिधरै॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥
अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तहजनम मरन कहु कहा बिनासन॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब
जम की त्रास कहहु किस होइ ॥

जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा॥
३ ॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति
होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ
धोता ॥ जह निरंजन निरंकार
निरबान॥तह कउन कउ मान कउन
अभिमान ॥ जह सरूप केवल जग
दीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु
कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति

संगि समावै ॥ तह किसहि भूख
कवनु तृपतावै ॥ करन करावन
करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि
सुमारु ॥ ४ ॥ जब आपनी सोभा
आपन संगि बनाई ॥ तब कवन
माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह
सरब कला आपहि परबीन ॥ तह
बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब
आपन आपु आपि उरिधारै ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा
॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ
चेरा॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद॥

नानक अपनी गति जानहु आपि
॥ ५ ॥ जह अछल अछेद अभेद
समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत
माइआ ॥ आपस कउ आपहि
आदेसु॥तिहु गुण का नाही परवेसु॥
जह एकहि एक एक भगवंता ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै
चिंता ॥ जह आपन आपु आपि
पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु
सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते
ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि
पहूचा ॥ ६ ॥ जह आपि रचिओ
परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि

कीनो बिसथारु ॥ पापु पुंनु तह
भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ
सुरग बंछावत॥ आल जाल माइआ
जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै
भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥
आपन खेलु आपि करि देखै ॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जह पसरै पासार संत परतापि ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उनकी सोभा उनहू बनी ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥

आपहि रस भोगन निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास
बोलै ॥८॥२१॥ सलोकु ॥

जीअ जंत के ठाकुरा
आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ
दूजा कह द्रिसटार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
आपहि एकु आपहि बिसथारु ॥

जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥
आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते
भिंन नही किछु होइ ॥ आपन सूति
सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ
जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु
सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी
तत का बेता ॥ नानक सगल
स्रिसटि का जेता ॥ १ ॥ जीअ
जंत्र सभ ताकै हाथ ॥ दीन
दइआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु
राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो
मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु
तजि अवर कहा ना जाइ ॥ सभ

सिरि एकु निरंजन राइ ॥ जीअ
की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
गुन निधान बेअंत अपार ॥नानक
दास सदा बलिहार ॥ २ ॥ पूरनि
पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि
होवत किरपाल ॥ अपने करतब
जानै आपि ॥ अंतरजामी रहिओ
बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु
भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि
धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए
मिलाइ ॥ भगति करहि हरि के
गुण गाइ ॥ मन अंतरि बिसवासु

करि मानिश्रा ॥ करनहारु नानक
इकु जानिश्रा ॥ ३ ॥ जनु लागा
हरि एकै नाइ ॥ तिसकी आस
न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ
सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि
परमपदु पाई ॥ इसते ऊपरि नही
बीचारु ॥ जा कै मनि बसिश्रा
निरंकारु ॥ बंधन तोरि भए निर-
वैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥
साध संगि मिलि करहु अनंद ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम

नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुलभ
देह का करहु उधारु ॥ अंम्रित
बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान
तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर
प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु
बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु
हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक
फल पावहु ॥ ५ ॥ हलतु पलतु
दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु
अंतरि उरिधारि ॥ पूरे गुर की पूरी
दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु
साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु
जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु

मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥ तिसते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक

ताके कारज पूरा ॥ ७ ॥ मति
पूरी अंमृतु जा की द्रिसटि ॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतर
जामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि
बसै सु होत निहालु ॥ ताकै निकटि
न आवत कालु ॥ अमर भए
अमरापदु पाइआ ॥ साध संगि
नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ

अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥ १ ॥

असटपदी ॥

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
सुंनि समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥ सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दहदिसे समाहि ॥ तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ १ ॥ बेद पुरान सिम्रिति

महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र
महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को
बोलै॥आपि अडोलु न कबहू डोलै॥
सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि
न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब
जोति महि जा की जोति ॥ धारि
रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर
परसादि भरम का नासु ॥ नानक
तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥
संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥

जिनि जाता तिसु की इह रहत ॥
सति बचन साधू सभि कहत ॥
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही॥४॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥
तिसु भावै ता एकंकारु ॥ अनिक
कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै
तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि
कवन कहीऐ दूरि ॥ आपे आपि

आप भरपूरि ॥ अंतर गति जिसु
आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन
आपि बुझाए ॥ ५ ॥ सरब भूत
आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि
पेखनहारा ॥ सगल समग्री जाका
तना ॥ आपन जसु आपही सुना ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥
६ ॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥

ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ तिसका कीआ सभु परवानु ॥ गुरप्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धंनु धंनु धंनु जनु

आइआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ
पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥

पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस
अनित तिआगहु तरंग ॥ संत
जना की धूरि मन मंग ॥ आपु
छोडि बेनती करहु ॥ साध संगि
अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन
के भरि लेहु भंडार ॥ नानक गुर
पूरे नमसकार ॥ १ ॥ खेम कुसल
सहज आनंद ॥ साध संगि भजु
परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु
जीउ ॥ गुन गोबिंद अंम्रित रसु
पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइण

एक ॥ एक रूप जा के रंग अनेक ॥
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥सिमरि
सिमरि नामु बारंबार ॥ नानक
जीअ का इहै अधार ॥ २ ॥ उतम
सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक
लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत
होत उधार ॥ आपि तरै लोकह
निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु
ता का संगु ॥ जा कै मनि लागा
हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु
वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु
गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै

माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥ सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ अंम्रित नामु साध संगि लैन ॥ सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी

सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु
मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब
इछा ताकी पूरन होइ ॥प्रधान पुरखु
प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच
पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै
आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि
चलै जनु सोइ ॥ नानक जिसहि
परापति होइ ॥ ५ ॥ खेम सांति
रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु
सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु
जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआन स्रेसट
ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ
कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि

सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एक द्रसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥ ६॥ इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मतांत केवल हरि नाम ॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अपराध साध संगि मिटै ॥ संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥ जाकै मसतकि करम

प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ताका दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंमृत ताकी बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ताके करम ॥ सभ ते ऊच ताकी सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ ८ ॥ २४ ॥

बारहमाहा तुखारी

तुखारी छंत महला १ बारहमाहा ॥

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अंमृतु पीवां ॥ रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सु करमा

॥ नानक पंथु निहाले साधन तूं सुणि आतम रामा ॥ १ ॥

बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ साधन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महल घरु ऊचउ निजघरि वासु मुरारे ॥ सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥ २ ॥

तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम

आपणो ॥ मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥ किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरिबिनु रहणु न जाए॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक द्रसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥ ३ ॥

बरसै अंमृतधार बूंद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण

सारी॥घरि घरि कंतु रवै सोहागणि
हउ किउ कंति विसारी ॥ उनवि
घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि
प्रेमु सुखावै ॥ नानक वरसै अंमृत
बाणी करि कृपा घरि आवै ॥४॥
चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥
बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि
बाहुड़ै ॥ पिरु घरि नही आवै धन
किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु
छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी
बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥
भवरु भवंता फूली डाली किउ
जीवा मरु माए ॥ नानक चेति

सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥ ५ ॥

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे॥घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु भावै सुरति सबदि मनु माना ॥ ६ ॥

माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै॥ थलतापहि सर भार साधन

बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी
गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥
साचै महलि रहै बैरागी आवण
देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी
हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि
मिलै गुण गहिली ॥७॥ आसाड़ु
भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती
दूख सहै सोखैअगनि भखै ॥ अगनि
रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सोकिरतु
न हारे ॥ रथु फिरै छाइआ धन
ताकै टीडुलवै मंझि बारे ॥ अवगण
बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु

साचु समाले ॥ नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि नसुखावए ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥ ९ ॥ भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥

जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु
माणी ॥ बरसै निसि काली किउ
सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइ-
अंगम फिरहि डसंते ॥ मछर डंग
साइर भर सुभर बिनु हरि किउ
सुखु पाईऐ ॥ नानक पूछि चलउ
गुर अपुने जह प्रभु तहही जाईऐ ॥
१० ॥ असुनि आउ पिरा साधन
झूरि मुई ॥ ता मिलीऐ प्रभु मेले
दूजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता
पिर मुती कुकह काह सि फुले ॥
आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि

चलत मनु डोले ॥ दहदिसि साख
हरी हरीआवल सहजि पकै सो
मीठा ॥ नानक असुनि मिलहु
पिआरेसतिगुर भए बसीठा ॥११॥
कतकि किरतु पइआ जो प्रभ
भाइआ ॥ दीपकु सहजि बलै तति
जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो धन
पिर मेलो धन उमाह सरसी ॥
अवगण मारी मरै न सीझै गुणि
मारी ता मरसी ॥ नामु भगति दे
निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी
आसा ॥ नानक मिलहु कपट दर
खोलहु एक घड़ीखट मासा ॥१२॥

मंघर माहु भला हरिगुण अंकि समावए ॥ गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ नानक साधन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥ १३ ॥ पोखि तुखारु पड़ै वणु तृणु रसु सोखै ॥ आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु

गुरसबदी रंगु माणी ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावहु मति देहो ॥ नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥१४॥

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहिअंकि समानिआ ॥ प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सिरि नावा ॥ गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ पुंन

दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ नानक माघि महारसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥१५॥

फलगुनि मनिरहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥ बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥ हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक मेलि लई गुर अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥

॥ १६ ॥ बेदस माह रुती थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधिजाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो॥ नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७॥१॥

❀ रामकली की वार ❀

राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जो खीवदै ॥ देगुना सति भैण भरावहैपारं गति दानुपड़ीवदै॥ नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीवदै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंमृतु पीवदै ॥ मति गुर आतमदेव दी गड़गिजोरि पराकुइजीअदै ॥ गुरि चेले रहरासिकीई नानकि सलामति

थीवदै॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥लहणे दीफेराईऐ नानकादोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ झुले सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आपखहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसंम दीनूरुअरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठै सचे पातिसाह मलु

जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि
गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु
हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ
करि पीरहु कंन मुरटीऐ ॥ दिलि
खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु
उचाइन्हि छटीऐ ॥ जिनि आखी
सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ
॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ
२ ॥ जिनि कीती सो मंनणा को
सालु जिवाहे साली ॥ धरमराइ है
देवता लै गला करे दलाली ॥
सतिगुरु आखै सचा करे सा बात
होवैदरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही

फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानक काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ीमसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंमदैनाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंडखीवीनेकजन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंमृतु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जा घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥ ३ ॥

होरिंग्रो गंग वहाईऐ दुनिग्राई ग्राखै किकिग्रोनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरकिग्रोनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किग्रोनु ॥ चउदह रतन निकालिग्रोनु करि ग्रावागउणु चिलकिग्रोनु॥ कुदरति ग्रहि वेखालीग्रनु जिणि एवड पिड ठिणकिग्रोनु ॥ लहणे धरिग्रोनु छत्रो सिरि ग्रसमानि किग्राड़ा छिकिंग्रोनु ॥ जोति समाणी जोति माहि ग्रापु ग्रापै सेती मिकिग्रोनु ॥ सिखां पुत्रां

घोखि कै सभ उमति वेखहु जिकि-
ग्रोनु ॥ जा सुधोसु ता लहणा
टिकिग्रोनु ॥ ४ ॥ फेरि वसाइग्रा
फेरु ग्राणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु
तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु
गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा
जिउ पाणी बूरु ॥ वर्हिऐ दरगह
गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु
हाथु न लभई तूं ग्रोहु ठरूरु ॥
नउनिधि नामु निधानु है तुधु
विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो
करे सो वञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै
मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि

वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ ५ ॥

सो टिका सो बैहणासोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहापोता परवाणु॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जसहंदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रैभाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ

सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडा सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जां तूं सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका

सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू
दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥ ६ ॥
धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि
सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी
होई करामाति आपि सिरजणहारै
धारिआ ॥ सिखी अतै संगती
पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥
अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु
न पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं
सेविआ भाउ करि से तुधु पारि
उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु
मुहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥
धंनु सो तेरा थानु है सचु तेरा

पैसकारिश्रा ॥ नानकु तू लहणा तू है गुरु श्रमरु तू वीचारिश्रा ॥ गुरु डिठा ता मनु साधारिश्रा ॥७॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु श्रापे होश्रा ॥ श्रापीन्है श्रापु साजिश्रोनु श्रापे ही थंम्हि खलोश्रा ॥ श्रापे पटी कलम श्रापि श्रापि लिखणहारा होश्रा ॥ सभ उमति श्रावण जावणी श्रापे ही नवा निरोश्रा ॥ तखति बैठा श्ररजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोश्रा ॥ उगवणहु तै श्राथवणहु चहु चकी कीश्रनु लोश्रा ॥ जिन्ही गुरू न

सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचेका सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥८॥१॥

फुनहे महला ५ (१३६१)

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हाथि कलंम अगंम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रुपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोहीदेखिदरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥ संत सभा महि बैस कि

कीरति मै कहां ॥ अरपी सभु
सीगारु एहु जीउसभु दिवा ॥ आस
पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥
हरिहां मसतकि होवै भागु त
साजनु पाईऐ ॥२॥ सखी काजल
हार तंबोल सभै किछु साजिआ
सोलह कीए सीगार कि अंजनु
पाजिआ ॥ जे घरि आवै कंतु त
सभु किछु पाईऐ ॥ हरिहां कंतै
बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ
॥३॥ जिसु घरि वसिआ कंतु सा
वडभागणो ॥ तिसु बणिआ हभु
सीगारु साई सोहागणो ॥ हउ सुती

होइ अचिंत मनिआस पुराईआ ॥ हरिहां जा घरि आइआकंतु त सभु किछु पाईआ ॥ ४ ॥ आसा इती आस कि आस पुराईऐ ॥ सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ हरिहां सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥ ५ ॥ कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ दुतरु इहु संसार सतिगुरू तराइआ ॥ मिटिआ आवागउणु जा पूरा पाइआ ॥ हरिहां अंमृतु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ

॥६॥ मेरै हाथि पदमु आगनि सुख
बासना ॥ सखी मोरै कंठि रतंनु
पेखि दुखु नासना ॥ बासउ संगि
गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥
हरिहां रिधि सिधि नवनिधि
बसहि जिसु सदा करि ॥७॥ पर-
त्रिअ रावणि जाहि सेई त लाजी
अहि ॥ नितप्रति हिरहि पर दरबु
छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरि गुण
रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥
हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहमु
बीचारई ॥८॥ ऊपरि बनै अकासु
तलै धर सोहती ॥ दहदिस चमकै

बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥ ६ ॥ डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥ वसदी सघनअपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥१०॥ चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ हरि हां तिउ

हरिजनु मांगै नामु नानक बलिहारणो ॥११॥ मित का चितु अनूपु मरंमु न जानीऐ ॥ गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ हरिहां चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥१२॥ सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला ॥ सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ खोजउ ताके चरण कहहु कत पाईऐ ॥ हरिहां सोई जतंनु बताइ सखी प्रिउ पाईऐ ॥१३॥ नैण न देखहि साध सि नैण

बिहालिआ ॥ करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ हरिहां जब बिसरै गोबिंद राइ दिनो दिनु घटीऐ ॥१४॥ पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ अंगसंगउरझाइ बिसरे तेसुंफिआ॥ है कोऊ ऐसामीतु जि तोरै बिखम गांठि ॥ नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥१५॥ धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ

ध्याईऐ ॥ हरिहां महा बिखादी
घात पूरन गुरु पाईऐ ॥ १६ ॥
सतिगुर कीनी दाति मूलि न
निखुटई ॥ खावहु भुंचहु सभि
गुरमुखि छुटई ॥ अंमृतु नामु निधानु
दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा
अराधि कदे न जांहि मरि ॥१७॥
जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा
॥ सगले होए सुख हरिनामु धिआ-
वणा ॥ जीअ करनि जैकारु निंदक
मुए पचि ॥ साजन मनि आनंदु
नानक नामु जपि ॥१८॥ पावन
पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥

झूठै रंगि खुआरु कहांलगु खेवीऐ हरि चंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिन जि दरगहि जानिआ ॥१६॥ कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥ महा द्रुगंधत वासु सठका छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ हरिहां हरि चंदउरी पेखि काहे सचु मानई॥२० ॥ जिसकी पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदिक अनिक उपाव कहां लउभाखई॥एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ हरिहां बिनु नावै

तनु छारुबृथा सभु जावई ॥२१॥
अउखधु नामु अपारु अमोलकु
पीजई ॥ मिलि मिलि खावहि संत
सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति
होइ तिसै ही पावणो ॥ हरिहां
हउ बलिहारी तिन्ह जि हरिरंगु
रावणो ॥ २२ ॥ वैदा संदा संगु
इकठा होइआ ॥ अउखद आए
रासि विचि आपि खलोइआ ॥ जो
जो ओना करम सु करम होइ
पसरिआ ॥ हरिहां दूख रोग सभि
पाप तनते खिसरिआ ॥२३॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ः ० सलोक महला ९ ः ०

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिहि बिधि जल कौ मीन ॥ १ ॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदास ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भज हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आन ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ धन दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथ ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ ता सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब

किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥ तनु धनु संपैसुख दीओ अरुजिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिहि भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥ पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ

नानकालीनताहि मै मान ॥११॥
घटि घटि मै हरि जू बसै
संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु
नानक तिह भजु मना भउनिधि
उतरहि पारि ॥१२॥ सुखु दुखु
जिह परसै नही लोभ मोह अभि-
मानु ॥ कहु नानक सुन रे मना
सो मूरति भगवान ॥१३॥ उस-
तति निंदिआ नाहि जिहि कंचन
लोह समानि ॥ कहु नानक सुनु
रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥
१४ ॥ हरख सोग जाकै नही
बैरी मीत समान ॥ कहु नानक

सुनि रे मना मुकति ताहि तै
जान ॥ १५ ॥ भै काहू कउ देत
नहि नहि भै मानत आनि ॥ कहु
नानक सुन रे मना गिआनी
ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिहि
बिखिआ सगली तजीलीओ भेख
बैराग ॥ कहु नानक सुन रे
मना तिह नर माथै भाग ॥ १७ ॥
जिहि माइआ ममतातजी सभ ते
भइओ उदास ॥ कहु नानक सुन
रे मना तिहि घटि ब्रहम निवासु
॥ १८ ॥ जिहि प्रानी हउमै तजी
करता राम पछान ॥ कहु नानक

वहु मुकति नरु इह मन साची
मान ॥ १९ ॥ भै नासन दुरमति
हरन कलि मै हरि को नाम ॥
निसदिन जो नानक भजै सफल
होहि तिह काम ॥२०॥ जिहबा
गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु
हरि नाम ॥ कहु नानक सुन रे
मना परहि न जमकै धाम ॥२१॥
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह
अहंकार ॥ कहु नानक आपन
तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥
जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे
जग कउ जानि ॥ इन मै कछु

साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥ निसि दिनि माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइन जिह चीत ॥२४॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ॥ २५ ॥ प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ. कै अंध ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुन रे मना

दुरलभ मानुख देह ॥ २७॥
माइआ कारनि धावही मूरख
लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु
हरि भजनि बिरथा जनमु सिरान
॥२८॥ जो प्रानी निसिदिनि भजे
रूप राम तिह जानु ॥ हरि जनि
हरि अंतरु नही नानक साची मानु
॥ २९ ॥ मनु माइआ मै फधि
रहिओ बिसरिओ गोबिंद नाम ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन
जीवन कउने काम ॥३०॥ प्रानी
राम न चेतई मद माइआ कै
अंध ॥ कहु नानक हरि भजन

बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥ सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ ना जमको त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥ बाल जुआनी अरु बिरध फुनि तीनि अवस्था जानि ॥ कहु

नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मान ॥ ३५ ॥ करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥ ३६ ॥ मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहनि भीत ॥३७॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासीगलि परी ॥ ३८ ॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु

नानक सुन रे मना हरि भावै सो होइ ॥ ३९ ॥ जगतु भिखारी फिरतु है सब को दाता राम ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जान ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखान ॥ ४१ ॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीति ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता

जानु ॥ तिहिनर हरि अंतरु नही
नानक साची मानु ॥ ४३ ॥ एक
भगति भगवान जिह प्रानी कै
नाहि मन ॥ जैसे सूकरु सुआन
नानक मानो ताहि तन ॥ ४४ ॥
सुआमी को गृहु जिउ सदा
सुआन तजत नही नित ॥ नानक
इह बिधि हरि भजउ इक मनि
हुइ इकि चित ॥ ४५ ॥
तीरथ बरत अरु दान करि मन
मै धरै गुमान ॥ नानक निहफल
जात तिह जिउ कुंचर इसनानु
॥४६॥ सिरु कंपिओ पग डगमगे

नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रस लीन ॥४७॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥ जग रचना सभ झूठु है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीत ॥४९॥ राम गइओ रावनु गइओ जाकउ बहु परवार ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारि ॥५०॥ चिंता ताकी कीजीऐ जो

अनहोनी होइ ॥ इह मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु के काल ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाड सगल जंजाल ॥५२॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गजि जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ बलु होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाइ ॥ नानक सभ किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ संग सखा सभ तजि गए

कोऊ न निबहिओ साथ ॥ कहु नानक इह बिपत मै टेक एक रघनाथ ॥ ५५ ॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुरमंतु ॥ ५६ ॥ राम नामु उरि मै गहिओ जाकै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥ १ ॥



०ः चलाणे के शबद ०ः

सूचना–अंति सतिगुर बोलिआ मै
पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥
जेहाचीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि॥
घलेआवहिनानकासदे उठीजाहि॥(म:२)

देवगंधारी महला ९ (५३६)

सभि किछुजीवतको बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥ १ ॥ मृग तृसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥

कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार ॥२॥२॥

तिलंग महला ९ (७२६)

जागि लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संग न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंध जन हितु जासिउ कीना॥ जीउ छुटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥ जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाए लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥

सूही रविदास जीउ (७१३)

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही॥ संगु
चलत है हम भी चलना ॥ दूरि
गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥
१॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु
रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि
हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि
मै मेरा॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा
॥ २ ॥ जनमु सिरानो पंथु न
सवारा ॥ सांझ परी दहदिस

अंधिआरा॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फनखाने ॥ ३ ॥ २ ॥

सिरी रागु महला ५ घरु २ (५०)

गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसारु॥ मुहलति पुंनी चलणा तूं संमलु घरबारु ॥ १ ॥ हरिगुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥ २ ॥ मेरी मेरी

किया करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥ ३ ॥ लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥१२॥

वडहंसु महला १ (५७९)

आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ रोवह बिरहा तनका आपणासाहिबु सम्हालेहां ॥ साहिब सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा॥ जिस का कीआ तिन

ही लीआ होआ तिसै का भाणा॥ जो तिनि करि पाइआ सो आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥१॥

(वार गूजरी) पउड़ी (५२३)

जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥जह जह रखहि आपितहजाइखड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा॥ जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा॥ नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा॥ १८ ॥

○ मंगला चरन और बेनती ○

सलोकु (२५६)

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥१॥

सलोकु (२५७)

धरि जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥१॥

सलोक महला ५ (१४२५)

गुरु पूरा जिनि सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥ ८ ॥

❀ गरभवती के पाठ लिए ❀

सूचना–नितनेम करने के पश्चात जपुजी और सुखमनी साहिबके पाठ करें ओर उन मैं रस लीन होवें ॥

सलोक महला ५ (१३५८)

सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हसत काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछ्ल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥ ५२ ॥

श्री मुखवाक पा० १० सवैया ॥

रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांति बचावै ॥ सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ॥ राखत है अपनो कर दै कर पाप संबूह न भेटन पावै ॥ औरकी बातकहां कहि तोसौं सु पेटहीकेपटबीचबचावै ॥६॥

बिलावलु महला ५ ॥ (८१९)

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा

भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ एका जिवलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥२॥ ॥ १५ ॥ ७९ ॥

० जनम समय के लिये ०

आसा महला ५ ॥ (३९६)

सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु

बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु
भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ
सभ महि लिखिआ धुर का
॥ १ ॥ रहाउ ॥ दसी मासी
हुकमि बालक जनमु लीआ ॥
मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ॥
गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे
साहिब कै मनि भावै ॥ २ ॥ वधी
वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम
कला हरि बंधि बहाली ॥ मन
चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥
भए अचिंत एक लिवलाइआ ॥
३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि

करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥ १०१ ॥

० माता की आसीस ०

गुजरी महला ५ (४९६)

जिसु सिमरत सभ किलविख नासहि पितरी होइ उधारो॥सो हरि हरि तुम्ह सदही जापहु जाका अंतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस

॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संत संगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥४॥३॥४॥

❀ अंमृत संसकार ❀

सलोक महला २ (१२३८)

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ नानक अंमृतु एकु है दूजा अंमृतु नाहि ॥ नानक अंमृतु मनै माहि पाईऐ गुरप्रसादि ॥ तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥१॥

तुखारी छंत महला ५ (१११७)

इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खनीऐ वंञा दरसन तेरे ॥दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख द्रसटि पेखि जीवा ॥ अमृत नामु सुनीजै

तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चातृकु बूंदेरे ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥२॥

अनंद साहिब में से (९१८)

सुरि नर मुनि जन अमृतु खोजदे सु अमृतु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाइ इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिसु नो आपि तुठा तिनि अमृतु गुर

ते पाइआ ॥१३॥

बिलावलु महला ५ (८०८)

लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥१॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजिसमाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अमृतु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥ २ ॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऐ किआकहि

मुखि बोला ॥३॥ सफल दरसु तेरा पारब्रहम गुण निधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥४॥३॥३३॥

पउड़ी (३२०)

ओथै अंमृतु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ जिसनो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥९॥

० कुड़माई के शबद ०

बिहागड़ा महला ५ छंत (५४७)

सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ सभि सुख

परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ भजु साध संगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥ बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहूनजाइआ ॥५॥४॥७॥

सूही महला ४ ॥ (७७३)

सतु संतोखु करि भाउ कुड़म कुड़माई आइआ बलिराम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलिराम

जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुर प्रसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥ २ ॥

* ढुकाउ के समय *

रागु सूही महला १ छंतु घरु २ ॥ (७६४)

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरि

मनि भाए पंचमिले सुखु पाइआ ॥
साई वसतु परापति होई जिसु
सेती मनु लाइआ ॥ अनदिनु
मेलु भइआ मनु मानिआ घर
मंदर सोहाए ॥ पंच सबद धुनि
अनहदवाजे हम घरि साजन आए॥

सूही महला १ छंत ॥ (७६४)

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु
तेरा राम ॥ घरि आपनड़ै
खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा
राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि
प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥

दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥ सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥ १ ॥

आसा महला ५ छंतु (४५२)

सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा॥ आपे जांञी आपे मांञी आपि सुआमी आपि देवा ॥

आपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥२॥

० ः अनंद कारज ः ०

(वार सिरी रागु) पउड़ी (९१)

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥ २० ॥

० ः सिखिआ ः ०

वर तथा कंनिआ को

(वार सूही) महला ३ (७८८)

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दोइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥

तिलंग महला १ (७२२)

जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥

(पुना)–सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥

(पुना)–आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥

सलोक सेख फरीद (१३८४)

निवणु सो अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआमंतु ॥ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥१२७॥

आसा महला ५ छंत में से (४५७)

मधुर बाणी पिरहि मानी थिरु सोहाग ता का बणा ॥

मारू वार महला १ (१०८८)

साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥२॥

पातशाही १० ॥

सुध जब ते हम धरी बचन गुर दए हमारे ॥ पूत इहै प्रण तोहि

प्राण जब लग घट थारे ॥ निज नारी कै संग नेह तुम नित बढे-यहु ॥ पर नारी की सेज भूलि सुपने हूं न जैयहु ॥५१॥

(भा: गुरदास जी) वार २९ पउड़ी १०

देखि पराईआ चंगीआ मावां भैणां धीआं जाणै ॥ उसु सूअरु उसु गाइ कै परधन हिंदु मुसलमाणै ॥ पुत्र कलत्र कुटंबु देखि मोहे मोहि न धोहि धिङाणे ॥ उसतति निंदा कंन सुणि आपहु बुरा न आखि वखाणै ॥ वड प्रतापु न आपु गणि कर अहंमेउ न किसै रञाणै ॥

गुरमुखि सुख फल पाइआ राजु जोगु रस रलीआ माणै ॥ साध संगति विटहु कुरबाणै ॥११॥

० लावां से पहिले ०

सूही छंत महला ४ (७७५)

हरि प्रभि काजु रचाइआ गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ साधन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ

मै साचा ना कदे मरै न
जाई ॥४॥१॥३०॥

वर का पला कंनिआ को पकड़ाते समय
सलोक महला ५ (९६३)

उसतति निंदा नानक जी मै हभ
वंञाईछोड़िआहभुकिछु तिआगी ॥
हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै
तैडै लागी ॥

(वार गूजरी) सलोक म: ५ (५२०)

प्रेम पटोला तै सहि दिताढकण कू
पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा
नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥

❀ लावां ❀

सूही महला ४ ॥ (७७३)

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करमु द्रिड़ाइआ बलिराम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलिराम जीउ ॥ धरमु द्रिड़हु हरिनामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै

नानकु लाव पहिली आरंभु
काजु रचाइआ ॥ १ ॥
हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु
मिलाइआ बलिराम जीउ ॥
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु
गवाइआ बलिराम जीउ ॥
निरमलु भउ पाइआ हरिगुण
गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥
हरि आतम रामु पसारिआ
सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको
मिलि हरि जन मंगल गाए ॥
जन नानक दूजी लाव चलाई

अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥
हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ
भइआ बैरागीआ बलिराम जीउ ॥
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ
वडभागीआ बलिराम जीउ ॥
निरमलु हरि पाइआ हरिगुण
गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥
संत जना वडभागी पाइआ हरि
कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै
हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि
जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु
नानकु बोलै तीजी लावै हरि
उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ हरि

चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ
हरि पाइआ बलिराम जीउ ॥
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि
तनि मीठा लाइआ बलिराम
जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ
भाइआ अनदिनु हरि लिव
लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ
सुआमी हरिनामि वजी वाधाई ॥
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ
धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु
नानकु बोले चउथी लावै हरि
पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

० लावां के बाद ०

जैतसरी महला ५ छंतु घरु १ (७०४)

यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नवरंगीआ ॥ वडभागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सत संगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

श्री रागु महला ४ घरु २ (७८)

वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी न कदे मरै न जाइआ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥२॥

वडहंस महला ५ छंत में (५७७)

पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥
मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे
राम ॥सभि गुणतेरे ठाकुर मेरे कित
मुखि तुधु सालाही ॥ गुण अवगुणु
मेरा किछु न बीचारिआ बखसि
लीआ खिन माही॥ नउ निधि पाई
वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥
कहु नानक मै वरु घरि पाइआ
मेरे लाथेजी सगल विसूरे ॥४॥१॥

:० दाज :०

सिरी रागु महला ४ घरु २ छंत में (७९)

हरिप्रभ मेरे बाबला हरि देवहुदानु मै दाजो ॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइग्रा खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइग्रा ॥ होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ ४ ॥

❀ भगत रतनावली ❀

१ ओं सतिगुरप्रसादि ॥

वार दसवीं भाई गुरदास जी

धू भगत

धू हसदा घरि आइआ करि पिआरु पिउ कुछड़ि लीता ॥ बाहहु पकड़ि उठालिआ मन विचि रोसु मत्रेई कीता ॥ डडहुलिक्का मां पुछै तूं सावाणी हैंकि सुरीता॥ सावाणी हां जनम दी नामु न भगती करमि हड़ीता ॥ किसु उदम ते राजु मिलै शत्रू ते सभ होवनि मीता॥ परमेसरु

आराधीऐ जिदूं होईऐ पतित पुनीता॥बाहरि चलिआ करणि तपु मन बैरागी होइ अतीता ॥ नारद मुनिउपदेसिआ नाम निधानु अमिउ रसु पीता ॥ पिछहुं राजे सदिआ अबिचल राज करहु नित नीता ॥ हारिचले गुरमुखिजगजीता ॥ १ ॥

प्रहिलाद भगत

घरि हरनाखश दैत दे कलरि कवलु भगतु प्रहिलादु ॥ पढ़न पठाइआ चाटसालपाधेचिति होआ अहिलाद ॥ सिमरै मनविचि राम नाम गावै सबदु अनाहद नाद ॥ भगति करनि

सभ चाटड़ै पांधेहोइ रहे विसमादु ॥ राजे पासि रूआइआ दोखी दैति वधाया वादु ॥ जल अगनी विचि घतिआ जलै न डुबै गुरपरसादि ॥ कढि खड़गु सदि पुछिआ कउणु सु तेरा है उसतादु ॥ थंम्म पाड़ि परगटिआ नर सिंघ रूप अनूप अनादि ॥ बेमुख पकड़ि पछाड़िअनु संत सहाई आदि जुगादि ॥ जै जै कार करनि ब्रहमादि ॥२॥

बलि राजा

बलि राजा घरि आपणै अंदरि बैठा जगु करावै ॥ बावण रूपी

आइआ चारि वेद मुखि पाठ सुणावै ॥ राजे अंदरि सदिआ मंग सुआमी जो तुधु भावै ॥ अछलु छलणि तुधु आइआ सुक परोहितु कहि समझावै ॥ करउ अढाई धरति मंगि पिछहु दे तृहु लोअ न मावै॥ दुइ करवा करि तिंन लोअ बलि राजा लै मगरु मिणावै॥ बलि छलि आपु छलाइअनु होइ दयालु मिलै गलि लावै ॥ दिता राजु पताल दा होइ अधीनु भगति जसु गावै ॥ होइ दरवान महा सुखु पावै ॥३॥

भगत अंबरीक

अंबरीक मुहि वरतु है राति पई दुरबासा आइआ ॥ भीड़ा ओसु उपारणा उह उठि न्हावणि नदी सिधाइआ॥ चरणोदकु लै पोखिआ ओहु सरापु देवण नो धाइआ ॥ चक्र सुदरशनु काल रूप होइ भीहावलु गरबु गवाइआ ॥ बामणु भंना जीउ लै रखि न हंघनि देव सबाइआ ॥ इंद्र लोकु शिव लोकु तजि ब्रहम लोकु बैकुंठ तजाइआ ॥ देवतिआं भगवान सणु सिखि देइ सभनां समझाइआ ॥

आइ पइआ सरनागती मारीदा अंबरीकि छुडाया ॥ भगति वछलु जगि बिरद सदाइआ ॥ ४ ॥

राजा जनक

भगतु वडा राजा जनकु है गुरमुखि माइआ विचि उदासी॥ देव लोकनो चलिआ गणा गंधरब सभा सुख वासी ॥जमपुरि गइआ पुकार सुणि विल लावनि जी नरक निवासी॥ धरमराइ नो आखिओनु सभनां दी करि बंद खलासी ॥करे बेनती धरमराइ हउ सेवक ठाकुर अबिनासी ॥ गहिणो धरिअनु एक

नाउ पापां नालि करै निरजासी ॥ पासंगि पापु न पुजनी गुरमुखि नाउ अतुल न तुलासी ॥ नरकहु छुटे जीअ जंत कटी गलहु सिलक जमफासी ॥ मुकति जुगति नावै दी दासी ॥५॥

राजा हरी चंद तथा तारा राणी

सुख राजे हरी चंद घरि नारि सु तारा लोचन राणी ॥ साध संगति मिलि गावदे राती जाइ सुणै गुरबाणी ॥ पिछो राजा जागिआ अधीराति निखंडि विहाणी ॥ राणी दिसि न आवई मन विचि वरत

गई हैराणी ॥ हौरतु राती उठिकै चलिश्रा पिछै तरल जुश्राणी ॥ राणी पहुती संगती राजे खड़ी खड़ाउ निसाणी ॥ साध संगति श्राराधिश्रा जोड़ी जुड़ी खड़ाउ पुराणी ॥ राजे डिठा चलितु इहु इह खड़ाव है चोजविडाणी ॥ साध संगति विटहु कुरबाणी ॥६॥

भगत विदर तथा दुरजोधन

श्राइश्रा सुणिश्रा बिदर दे बोलै दुर जोधनुहोइ रुक्खा॥ घरि श्रसाडे छडिकै गोलेदेघरि जाइकिसुक्खा॥ भीखमु द्रोणा करण तजि सभा

सीगार वडे मानुक्खा ॥ फु'गी जाइ बलाइओनु सभना देजीग्र अंदरि धुक्खा ॥ हसि बोले भगवान जी सुणिहु राजा होइ सनमुक्खा ॥ तेरे भाउ न दिसई मेरे नाही अपदा दुक्खा ॥ भाउ जिवेहा बिदर दे होरी दे चिति चाउ न चुक्खा ॥ गोबिंदभाउ भगति दा भुक्खा ॥७॥

द्रोपती जी

अंदरि सभा दुसासनै मथे वाल द्रोपती आंदी ॥ दूतां नो फुरमाइआ नंगी करहु पंचाली बांदी ॥ पंजे पांडो वेखदे अउघटि

रुद्धी नारि जिन्हां दी ॥ अक्खीं मीटि धिआनु धरि हाहा कृसन करै बिललांदी ॥ कपड़ कोटु उसारिआनु थक्केदूत न पारि वसांदी ॥ हत्थ मरोड़नि सिर धुणनिपछोतानि करनि जाहिजांदी ॥घरिआई ठाकुर मिले पैज रही बोले शरमांदी ॥ नाथ अनाथां बाणि धुरांदी ॥८॥

भगत सुदामा जी ॥

बिप सुदामा दालिदी बाल सखाई मित्र सदाए ॥ लागू होई बाह्मणी मिलि जगदीस दलिद्र गवाए ॥ चलिआ गणदा

गटीआं क्यों करि जाईऐ कौणु मिलाए ॥ पहुता नगरि दुआरका सिंघ दुआरि खलोता जाए ॥ दूरहुं देखि डंडउत करि छडि सिंघासणु हरि जी आए ॥ पहिले दे पर-दखणा पैरीं पैकै लै गलि लाए ॥ चरणोदकु लै पैर धोइ सिंघासणु उते बैठाए ॥ पुछै कुसलु पिआरु करु गुर सेवा दी कथा सुणाए ॥ लैकै तंदुल चब्बिओनु विदा करे अगै पहुंचाए ॥ चारि पदारथ सकुचि पठाए ॥ १ ॥

भगत जैदेउ जी

प्रेम भगति जैदेउ करे गीत गोबिंद सहज धुनि गावै ॥ लील्हा चलित वखाणदा अंतरजामी ठाकुर भावै॥ अक्खर इकु न आवड़ै पुसतकु बन्हि संधिआ करि आवै ॥ गुण निधान घरि आइकै भगत रूपिलिखिलेखु बणावै॥ अक्खरपढ़ि परतीति करि हुइविसमादु न अंगि समावै ॥ वेखै जाइ उजाड़ि विचि बिरखु इकु आचरज सुहावै ॥ गीत गोबिंद संपूरणो पति पति लिखिआ अंत न पावै ॥ भगति

हेति परगासु करि होइ दइआलु मिलै गलि लावै ॥ संत अनंत न भेद गणावै ॥ १० ॥

भगत नामदेव जी

कंम कितै पिउ चलिआ नामदेउ नो आख सिधाइआ॥ठाकुर दी सेवा करीं दुधु पिआवणुकहि समझाइआ ॥ नामदेउ इसनानु करि कपल गाइ दुहि कै लै आइआ ॥ ठाकुर नो न्हावालिकै चरणोदकुलै तिलकु चढ़ाया ॥ हथि जोड़ि बिनती करै दूधु पीअहु जी गोबिंद राइआ ॥ निहचउ करि आराधिइआ होइ

दयालु दरसु दिखलाया ॥ भरी कटोरी नामदेवि लै ठाकुर नो दूध पिआइआ ॥ गाइ मुई जीवालिओनु नामदेउ दा छप्पर छाया॥फेरि देहुरा रखिओनु चारि वरन लै पैरी पाइआ ॥ भगत जना दा करे कराइआ ॥११॥

नामदेव और तृलोचन जी

दरसनु वेखण नामदेव भलके उठि तृलोचन आवै॥भगति करनि मिलि दुइ जणे नामदेउ हरि चलितु सुणावै ॥ मेरी भी करि बेनती दरसनु देखां जे तिसु भावै ॥

ठाकुर जी नो पुछिओसु दरसनु किवें तृलोचनु पावै ॥ हसि कै ठाकुर बोलिआ नामदेउ नो कहि समझावै ॥ हथि न आवै भेटु सो तुसि तृलोचन मैं मुहि लावै ॥ हउं अधीनु हां भगत दे पहुचि न हंघां भगती दावै ॥ होइ विचोला आणि मिलावै ॥ १२ ॥

भगत धंना जी और ब्राहमण

बाम्हणु पूजै देवते धंना गऊ चरावण आवै ॥ धंने डिठा चलितु एहु पुछै बाम्हणु आखि सुणावै ॥ ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई

फलु पावै ॥ धंना करदा जोदड़ी
मै भि देह इक जे तुधु भावै ॥
पथरु इक लपेटि करि दे धंनै
नो गैल छुडावै ॥ ठाकुर नो
न्हावालि कै छाहि रोटी लै भोगु
चड़ावै॥हथि जोड़ि मिनतां करै पैरी
पै पै बहुतु मनावै ॥ हउं भी मूंह न
जुठालसां तूं रुठामैं किहुन सुखावै
॥ गोसाई परतखि होइ रोटी खाइ
छाहि मुहि लावै ॥ भोला भाउ
गोबिंदु मिलावै ॥१३॥

भगत बेणी जी

गुरमुखि बेणी भगति करि जाइ

इकांतु बहै लिवलावै ॥ करम करै अधिआतमीहोर सु किसै न अलखु लखावै॥घरिआइआ जा पुछीऐराजु दुआरि गइआ आलावै ॥ घरि सभ वथू मंगीअनि वल छलु करिकै झतु लंघावै ॥ वडा सांगु वरतदा ओहु इक मनि परमेसरु ध्यावै ॥ पैज सवारै भगत दी राजा होइ कै घरि चलि आवै ॥ देइ दिलासा तुसि कै अणगणती खरचीपहुंचावै॥ओथहु आइया भगत पासि होइ दिआलु हेतु उपजावै ॥ भगत जनां जैकारु करावै ॥ १४ ॥

भगत कबीर तथा रामा नंद जी

होइ बिरकतु बनारसी रहिंदा रामा नंदु गुसाईं ॥ अंमृतु वेले उठकै जांदा गंगा न्हावण ताईं ॥ अगों ही दे जाइकै लंमा पिआ कबीर तिथाईं ॥ पैरी टुंबि उठालिआ बोलहु राम सिख समझाई ॥ जिउं लोहा पारसु छुहे चंदन वासु निंमु महिकाई ॥ पसू परेतहु देव करि पूरे सतिगुर दी वडिआई ॥ अचरज नो अचरजु मिलै बिसमादै बिसमादु मिलाई ॥

झरणा झरदा निझरहुं गुरमुखि बाणी अघड़ घड़ाई ॥ राम कबीरै भेदु न भाई ॥ १५ ॥

भगत सैण जी ॥

सुणि परतापु कबीर दा दूजा सिक्ख होआ सैणु नाई ॥ प्रेमि भगति राती करै भलकै राज दुआरै जाई ॥ आए संत पराहुणे कीरतनु होआ रैणि सबाई ॥ छडि न सकै संत जन राज दुआरि न सेव कमाई ॥ सैण रूप हरि जाइकै आइआ राणे नो रीझाई ॥ साध जनां नो विदा करि राज दुआरि

गइआ शरमाई ॥ राणे दूरहुं सदिकै गलहुं कवाइ खोलि पैनाई॥ वसि कीता हउं तुधु अजु बोलै राजा सुणै लुकाई ॥ परगटु करै भगति वडिआई ॥ १६ ॥

भगत रविदास जी

भगतु भगतु जगि वजिआ चहु चक्कां दे विचि चमिरेटा ॥ पाणा गंढै राह विचि कुला धरम ढोइ ढोर समेटा ॥ जिउं करि मैलै चीथड़ै हीरा लाल अमोलु पलेटा ॥ चहुं वरनां उपदेसदा गिआन धिआनु करि भगति सहेता ॥

न्हावणि आइआ संगु मिलि बानारस करि गंगा थेटा ॥ कढि कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा दी भेटा ॥ लग्गा पुरबु अभीच दा डिठा चलितु अचरज अमेटा ॥ लइआ कसीरा हथिकढि सूतु इकु जिउ ताणा पेटा ॥ भगत जनां हरि मां पिउ बेटा ॥ १७ ॥

अहिलिया और गोतम

गोतम नारिअहिलआतिसनो देखि इंद्र लोभाणा ॥ परघरि जाइ सरापु लैहोइ सहस भगपछोताणा ॥ सुंञा होआ इंद्र लोकु लुकिआ सरवर

मनि सरमाणा ॥ सहस भगहु लोइण सहस लैंदोई इंद्र पुरी सिधाणा ॥ सती सतहु टलि सिला होइ नदी किनारै बाझु पराणा ॥ रघुपति चरन छुहिदिआं चली सुरगपुरि बणे बिबाणा ॥ भगत वछल भआयाईअहुं पतित उधारणु पाप कमाणा ॥ गुण नों गुण सभ को करै अउगुण कीते गुण तिसु जाणा ॥ अविगति गति किआ आखि वखाणा ॥१८॥

भगत बालमीक जी ॥

वाटै माणस मारदा बैठा बालमीक बटवाड़ा । पूरा सतिगुरू भेटिआ मन विचि होआ

खिजो ताड़ा॥ मारण नो लोचै घणा कढि न हंघै हत्थु उघाड़ा॥ सतिगुर मनूआ राखिआ होइ न आवै उछोहाड़ा ॥ अउगुणु सभ प्रगासिअनु रोजगारु है एहु असाड़ा॥ घरि विचि पुछण घलिआ अंतकाल है कोइ असाड़ा ॥ कोड़मड़ा चउखंनीऐकोइ न बेली करदे झाड़ा ॥ सच्चु द्रिड़ाइ उधारिअनु टपि निकत्था उपरवाड़ा ॥ गुरमुखि लंघै पाप पहाड़ा ॥ १९ ॥

अजामल जी

पतित अजामलु पाप करि जाइ कलावतणी दे रहिआ ॥ गुरु ते बेमुखु होइ कै पाप कमावै दुरमति दहिआ ॥ बृथा जनमु गवा-इअनु भवजल अंदरे फिरदा वहिआ ॥ छिअ पुत जाए वेसुआ पापां दे फल इछे लहिआ पुतु उपंना सतवां नाउ धरन नो चिति उमहिआ ॥ गुरू दुआरे जाइ कै गुरमुखि नाउ नराइणु कहिआ ॥ अंतकाल जमदूत वेखि पुत्त नराइण बोलै छहिआ ॥ जमगण

मारे हरि जनां गइआ सूरग जमुडंडु न सहिआ ॥ नाइ लए दुखु डेरा ढहिआ॥२०॥

गनका

गनिका पापणि होइकै पापां दा गलि हारु परोता॥महां पुरखु अचाणचक गनिका वाड़े आइ खलोता ॥ दुरमति देखि दइग्राल होइ हत्थहु उसनों दितोसु तोता ॥ राम नामु उपदेसु करि खेलि गइग्रा देवणजु सओता ॥ लिवलागी तिसु तोतिग्रहुं नित पढ़ाए करै असोता॥ पतित उधारणु राम नामु दुरमति पाप कलेवरु धोता ॥ अंतकालु जमजालु तोड़ि नरकै विचि न खाधुसु गोता ॥ गई बैकुंठि बिबाणि चढ़ि नाउ नाराइणु छोति अछोता॥ थाउ निथावे माणु मणोता ॥२१॥

(पूतना)

आई पापणि पूतना दुही थणी विहु लाइ वहेली ॥ आइ बैठी परवार विचि नेहुं लाइ नवहाणि नवेली ॥ कुछाड़ लए गोविंदराइ

करि चेटक चतुरंग महेली ॥ मोहणु मंमे पाइश्रोनु बाहिरि आई गरब गहेली ॥ देह वधाइ उचाइनु तिह चरिआरि नारि अठिखेली॥तिहु लोआं दा भारु दे चंमड़िआ गलि होइ दुहेली॥ खाइ पछाड़ पहाड़ वांगि जाइ पई उजाड़ि धकेली ॥ कीती माउ तुलि सुहेली ॥ २२ ॥

बद्धक

जाइ सुता परभास विचि गोडे उते पैर पसारे ॥ चरण कमल विचि पदमु है झिल मिलि झलकै वांगी तारे ॥ बद्धकु आइश्रा भालदा मिरगै जाणि बाणु लै मारे ॥ दरसन डिठोसु जाइकै करण पलाव करे पूकारे ॥ गलि विचि लीता क्रशन जी अवगुणु कीता हरि न चितारे॥ करि किरपा संतोखिआ पतित उधारणु बिरदु बीचारे ॥ भले भले करि मंनीअनि बुरिआं दे हरि काज सवारे ॥ पाप करेदे पतित उधारे ॥ २३ ॥ १० ॥

०ः सहंसर नामा ः०

मारू महला ५ ॥ (१०८२)

अचुत पारब्रहम प्रमेसरु अंतरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिखी केस गोवर-धनधारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव कृस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जग जीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥ २ ॥ धरणीधर ईस नरसिंह नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे पृथमि धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ की सेती है चंगा॥३॥श्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥४॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपीनाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥ मुकंद मनोहर लखमी

नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण॥
कमला कंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी
निहसंगा ॥६॥ अमेघ दरसन आजूनी संभउ
॥ अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥
अबिनास अबिगत अगोचर सभु किछु
तुझही है लगा ॥७॥ श्री रंग बैकुंठ के वासी
॥ मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥
केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि
सो होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निरवैरु समा-
इआ ॥ धारि खेलु चतुर भुजु कहाइआ ॥
सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ
मोहैगा ॥९॥ बनमाला बिभूखन कमलनैन
॥ सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र
गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥१०॥
पीत पीतंबर तृभवण धणी ॥ जगंनाथु
गोपालु मुखि भणी॥ सारिंगधर भगवान
बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥
निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ धनंजै जलि
थलि है महीऐ ॥ मिरत लोक पइआल

समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ पतित पावन दुख भै भंजनु अहंकार निवारणु है भव खंडनु ॥ भगती तोखित दीन कृपाला गुणे न कितही है भिगा॥१३॥ निरंकारु अछल अडोलो॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना॥आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा॥१५॥एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥ १७ ॥ द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिंद संत रेना ॥ मसतकि लाइ परमपदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥१८॥ जिन

कउ क्रिपा करी सुख दाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ ॥ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥१९॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सतिनामु तेरा परा पूरबला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु दासन की करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥



प्रकाशक:—
खालसा ब्रादर्ज, माई सेवा, अमृतसर

ततकरा सुन्दर गुटका